जुलाई 2017

दादावाणी

कीमत ₹ 10

जगत् के लिए काम करो, आपका काम होता ही रहेगा। जगत् के लिए काम करोगे तब आपका काम युँ ही होता रहेगा और तब आपको आश्चर्य होगा !

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 12 अंक : 9
अखंड क्रमांक : 141
जुलाई 2017

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

जगत् कल्याण में ही समाया स्वकल्याण

संपादकीय

परम पूज्य दादाश्री ने अपनी पूरी ज़िंदगी में एक ही ध्येय रखा था 'जगत् कल्याण की भावना'। किस प्रकार से संसार के जीव सभी प्रकार की सांसारिक उलझनों व दु:खों में से मुक्त होकर आत्मसुख की रमणता में रहें। बचपन से ही उनकी भावना थी कि मुझे जो कोई भी मिले उसे सुख मिलना ही चाहिए, वर्ना मेरा उससे मिलना व्यर्थ है।

'संसार के लोग सुख-शांति प्राप्त करें और कितने ही लोग मोक्ष प्राप्त करें' जीवनभर वे इसी ध्येय के लिए रात-दिन प्रयत्नशील रहे, सर्दी-गर्मी व बरसात में, अपने शरीर की परवाह किए बिना दूर-दूर तक लंबी यात्रा करके सत्संग और ज्ञान के लिए गाँव-गाँव, शहर-शहर, देश-विदेश में अंतिम क्षण तक कार्यरत रहे। कैसी करुणा छलकती है ज्ञानी के हृदय में!

लोग उनसे पूछते थे कि आत्मस्वरूप हुए दादाश्री इन संसारी बातों में क्यों समय देते हैं, तब बहुत ही करुणा भरे शब्दों में दादाश्री कहते कि 'लोग इन संसारी उलझनों में से निकलें! कितनी उलझनें हैं? अगर वे अपनी उलझनों में से बाहर निकलेंगे तभी इस ज्ञान को प्राप्त करेंगे और तभी मोक्ष के मार्ग पर आएँगे।' सामने वाले की अड़चनों को समझकर, वे निरंतर इसी भावना में रहे कि ये कैसे दूर हो और तभी उनमें कारुण्यता प्रकट हुई, अद्‌भुत अध्यात्म विज्ञान प्रकट हुआ।

बहुत ही सरल भाषा में जगत् कल्याण के बारे में समझाते हुए दादाश्री कहते हैं कि, 'जो खुद अपना कल्याण करता है, वही दूसरों का कल्याण कर सकता है।' खुद का कल्याण होने के बाद ही भीतर सच्ची जगत् कल्याण की भावना प्रकट होती है और खुद के कल्याण की शुरुआत तो यह ज्ञान मिलते ही, आज्ञापालन करने से हो जाती है। जहाँ पर क्लेश-कषाय व विषय नहीं हैं, तभी से कल्याण स्वरूप होने की शुरुआत होती है।

खुद के स्वरूप में रहकर दादाश्री ने लोगों के कल्याण की भावना से जो करुणा भरा व्यवहार, जिस प्रकार की वीतरागता से किया है, वह वास्तव में बेजोड़ है। वीतरागता के साथ-साथ व्यवहार जागृति सिर्फ ज्ञानीपुरुष के निरपेक्ष व्यवहार में ही देखने मिलती हैं। किसी भी प्रकार के अहंकार, खुद के स्वार्थ या अपेक्षा के बगैर, सिर्फ लोगों के कल्याण के लिए ही उन्होंने जो करुणा बरसाई है, इस काल में उसकी मिसाल मिलना मुश्किल है।

प्रस्तुत संकलन में ज्ञानी के ही शब्दों में उनके हृदय की भावनाएँ उजागर हुई हैं। उन ज्ञानी की और उनके द्वारा दिए गए ज्ञान की भक्ति द्वारा हम अपने डिस्चार्ज कषायों को ज्ञान की जागृति से खत्म करके, उनकी यह जगत् कल्याण की भावना को संजोते हुए इस जगत् कल्याण के मिशन में सहायक बनें। अपने मन-वचन-काया संपूर्ण रूप से समर्पित करके, जगत् कल्याण के कार्य में लघुत्तम भाव से निमित्त बनकर अपना जीवन सार्थक कर लें, यही अंतर की अभिलाषा है।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

जगत् कल्याण में ही समाया स्वकल्याण

धर्म की शुरुआत ओब्लाइजिंग नेचर से

प्रश्नकर्ता : जीवन को सात्विक और सरल बनाने के क्या उपाय है?

दादाश्री : तेरे पास जितना हो ओब्लाइजिंग नेचर (परोपकारी स्वभाव) रखकर लोगों को उतना ही देता रह। तेरा जीवन यों ही सात्विक होता जाएगा। ओब्लाइजिंग नेचर किया है तूने? तुझे ओब्लाइजिंग नेचर अच्छा लगता है?

प्रश्नकर्ता : कुछ अंश तक किया है!

दादाश्री : अधिक करेंगे तो अधिक फायदा होगा। किसी के लिए फेरा लगाकर, चक्कर लगाकर, पैसे देकर, किसी दु:खी को दो कपड़े सिलवा दें, यों ओब्लाइज करना। धर्म की शुरुआत ही 'ओब्लाइजिंग नेचर' से होती है। आप अपने घर का दूसरों को दो, वहीं पर आनंद है जबकि लोग लेना सीखते हैं! आप अपने लिए कुछ भी मत करना, लोगों के लिए ही करना तो अपने लिए कुछ भी नहीं करना पड़ेगा।

यह संसार आपको पुसाता हो, संसार आपको पसंद हो, संसार की चीज़ों की इच्छा हो, संसार के विषयों की वांछना हो तो इतना करो, 'योग, उपयोग, परोपकाराय।' योग यानी यह मन-वचन-काया का योग और उपयोग यानी बुद्धि का उपयोग करना, मन का उपयोग करना, चित्त का उपयोग करना। इन सभी का उपयोग दूसरों के लिए करना और यदि दूसरों के लिए खर्च नहीं करते, तब भी लोग आखिर में घर वालों के लिए तो खर्च करते हैं न! भगवान कहते हैं कि मन-वचन-काया और आत्मा (प्रतिष्ठित आत्मा) का उपयोग दूसरों के लिए करना। फिर तुझे कोई भी दु:ख आए तो मुझे बताना।

भगवान किस पर राज़ी रहते हैं? जो सभी के दु:ख ले ले और सामने वाले को सुख दे उस पर। सभी को सुख दिया इसलिए उसके 'रिएक्शन' में हमें सुख ही मिलेगा। सुख दोगे तो आपको तुरंत ही घर बैठे सुख मिलेगा!

इस संसार में दो प्रकार के लोगों की चिंता मिटती है, एक ज्ञानीपुरुष की और दूसरा परोपकारी की। ईमानदारी और पारस्परिक 'ओब्लाइजिंग नेचर', बस, इतना ही ज़रूरी है। पारस्परिक उपकार करना, यही मनुष्य जीवन की बड़ी उपलब्धि है!

मैं तो पच्चीस-तीस साल की उम्र में भी अहंकार करता था और वह भी विचित्र प्रकार का अहंकार करता था। कोई व्यक्ति मुझ से मिले और उसे लाभ नहीं हो तो मेरा मिलना व्यर्थ था! अर्थात् हर एक व्यक्ति को मुझ से लाभ प्राप्त हुआ था। आम का पेड़ क्या कहता है कि कोई मुझ से मिला और आम का मौसम हो और यदि सामने वाले को लाभ नहीं हुआ तो मैं आम ही नहीं। भले ही छोटा आम हो तो छोटा, तुझे ठीक लगे वैसा, तुझे उसका लाभ तो होगा

न! वह आम का पेड़ कोई लाभ नहीं उठाता है। ऐसे कुछ विचार तो होने चाहिए न? यह ऐसा मनुष्यपन क्यों होना चाहिए?

मनुष्य जीवन का विशेष ध्येय

बिना ध्येय के जीवन का तो, कोई अर्थ ही नहीं है। डॉलर आते हैं और खा-पीकर मज़े उड़ाते हैं और पूरे दिन चिंता-वरीज़ करते रहते हैं, इसे जीवन का ध्येय कैसे कहेंगे? जो मनुष्यपन मिला है, वह व्यर्थ चला जाए, उसका क्या अर्थ है? इसलिए, मनुष्यपन मिलने के बाद अपने ध्येय तक पहुँचने के लिए क्या करना चाहिए? यदि संसार के सुख चाहिए, भौतिक सुख चाहिए तो, आपके पास जो कुछ भी हो वह लोगों को दो। लोगों को कुछ भी सुख दोगे तो आप सुख की आशा कर सकते हो, नहीं तो आपको सुख नहीं मिलेगा और यदि दु:ख दिया तो आपको दु:ख मिलेगा।

प्रश्नकर्ता : यह मनुष्य अवतार व्यर्थ नहीं जाए, उसके लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : 'यह मनुष्य अवतार व्यर्थ नहीं जाए,' यदि पूरे दिन उसी का चिंतन करेंगे तो वह सफल होगा। इस मनुष्य अवतार की चिंता करनी है, जबकि लोग लक्ष्मी की चिंता करते हैं! कोशिश करना आपके हाथ में नहीं है लेकिन भाव करना आपके हाथ में है! कोशिश करना दूसरों की सत्ता में है(व्यवस्थित शक्ति के अधीन)। भाव का फल आता है। वास्तव में तो भाव भी पर सत्ता है लेकिन यदि भाव करते हो तो उसका फल आता है।

प्रश्नकर्ता : मनुष्य जन्म की विशेषता क्या है?

दादाश्री : मनुष्य जीवन परोपकार के लिए है और हिंदुस्तान के लोगों का जीवन 'एब्सोल्यूटिज़म' के लिए, मुक्ति के लिए है। हिंदुस्तान के अलावा बाहर अन्य देशों में जो जीवन है, वह परोपकार के लिए है। परोपकार मतलब मन का उपयोग भी दूसरों के लिए करना, वाणी का उपयोग भी दूसरों के लिए करना और वर्तन का उपयोग भी दूसरों के लिए करना!

खुद पर उपकार करने के लिए ही सबकुछ करना है। यदि खुद पर उपकार करेगा तो उसका कल्याण हो जाएगा लेकिन उसके लिए खुद अपने आप को (खुद के आत्मा को) जानना होगा। तब तक लोगों पर उपकार करते रहना, उसका भौतिक फल मिलता रहेगा। खुद अपने आप को जानने के लिए, यह जानना होगा कि 'हम कौन हैं'।

दूसरा इस हिंदुस्तान के मनुष्यों का जन्म किसलिए है? अपना यह अज्ञान रूपी बंधन, हमेशा का बंधन टूटे, इस हेतु के लिए है, 'एब्सोल्यूट' होने के लिए है और यदि यह 'एब्सोल्यूट' (संपूर्ण) होने का ज्ञान प्राप्त नहीं हो तो तू दूसरों के लिए जीना। ये दो कार्य करने के लिए ही हिंदुस्तान में जन्म है।

जगत् कल्याण वह सूक्ष्म भाषा

प्रश्नकर्ता : दादा, यह लोकसेवा, समाज कल्याण, जगत् कल्याण सभी एक ही कहलाएँगे न?

दादाश्री : लोग ऐसे तो हैं नहीं कि वास्तव में जनसेवा करें। यह तो भीतर छुपा हुआ कीर्ति का लोभ है, मान का लोभ है, सब तरह-तरह के लोभ पड़े हैं, वे करवाते हैं। जनसेवा करने वाले लोग तो कैसे होते है? वे अपरिग्रही पुरुष होते हैं। ये सब तो नाम कमाने के लिए, 'धीरे-धीरे किसी दिन मंत्री बनूँगा' ऐसा करके जनसेवा करता है। भीतर नीयत चोर है, इसलिए बाहर की मुश्किलें, बेकार के परिग्रह, वे सभी बंद कर

दो तो सब ठीक हो जाएगा। यह तो एक ओर परिग्रही, संपूर्ण परिग्रही रहना है और दूसरी ओर जनसेवा चाहिए, ये दोनों कैसे संभव हैं?

यह लोकसेवा तो इसलिए करनी है कि भगवान मिलें। लोकसेवा तो हृदय से होनी चाहिए। हृदयपूर्वक हो तो सब जगह पहुँचेगी। लोकसेवा और प्रख्याति दोनों मिल जाएँ तो मुश्किल में डाल देते हैं इंसान को। प्रख्याति रहित लोकसेवा हो, तब सही है। प्रख्याति तो होनी ही है, लेकिन प्रख्याति की इच्छा न हो, ऐसा होना चाहिए।

ये जो समाज कल्याण करते हैं, वह जगत् कल्याण नहीं कहलाता। वह तो एक सांसारिक भाव है, वह सब समाज कल्याण कहलाता है। जितना जिससे हो पाए वे उतना करते हैं, वह सब स्थूल भाषा है।

जगत् कल्याण करना वह तो सूक्ष्म भाषा, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम भाषा है! सिर्फ ऐसे सूक्ष्मतम भाव ही होते हैं या फिर उसके छींटे ही होते हैं।

एक व्यक्ति भगवान से रोज़ प्रार्थना करता कि, 'हे भगवान! मुझे सुखी करो, सुखी करो।' दूसरा व्यक्ति जब प्रार्थना करता है तब कहता है कि, 'हे भगवान! घर के सभी लोग सुखी हों।' उसमें खुद तो आ ही जाता है। वास्तव में दूसरा व्यक्ति सुखी होता है, पहले की अर्ज़ी बेकार जाती है। और हम तो जगत् कल्याण की भावना करते हैं उसमें खुद का आत्यंतिक कल्याण आ जाता है।

जगत् कल्याण की परिभाषा

प्रश्नकर्ता : दादा, जगत् कल्याण शब्द क्या है? समझाइए।

दादाश्री : जगत् कल्याण शब्द तो कौन बोल सकता है? कोई बोलता ही नहीं। जिसका खुद का कल्याण हो गया हो वही बोलता है। कौन बोलता है? जब जगत् कल्याण करने के लिए बाहर जाते हैं तब लोग पूछते हैं, कि 'घर से कल्याण करके आए हो या यों ही यहाँ आए हो? जाओ, ऐसा मुँह लेकर वापस!' लोग तो जवाब देंगे या नहीं? जगत् का कल्याण करने आए हैं! अब अपने महात्मा क्या करते हैं? बस, चल पड़ते हैं। कहते हैं कि 'भाई हम तो जगत् कल्याण का निमित्त बनने के लिए तैयार हैं।' 'अरे! निमित्त किस तरह से? क्या आपके घर का कल्याण हो गया है?' तब अपने महात्मा 'हाँ' कहते हैं। क्या कहते हैं? 'आपको जो भी जाँच-पड़ताल करनी हो, कर लो और हमारा कल्याण देख लो' कहते हैं। क्या कहते हैं? जगत् का कल्याण करने के लिए नहीं लेकिन हम तो निमित्त बनने के लिए निकले हैं।

संसार में किसी ने ऐसी जगत् कल्याण की भावना नहीं की है। पहले, जहाँ खुद का ही ठिकाना न हो, वे लोगों के बारे में कहाँ सोचेंगे। सभी ने कैसी भावनाएँ की हैं? उच्च पद पर पहुँचने की कामना की है। साधु हो तो 'मुझे आचार्य कब बनाएँगे? और आचार्य हो तो मुझे सूरी कब बनाएँगे?' ऐसी ही भावनाएँ हैं सभी की। कलेक्टर हो तो 'मुझे कमिशनर कब बनाएँगे?' और लोगों को काला बाज़ार करने की भावना है। उस भावना के अलावा दूसरा कुछ है ही नहीं।

चैरिटी बिगिन्स फ्रॉम होम

इस जगत् का कल्याण कौन कर सकता है, वह जानते हो? जो खुद का कल्याण करता है, वही दूसरों का कल्याण कर सकता है। खुद में ही बरकत नहीं होती और बाहर भाषण देने के लिए निकलते हैं, निकलते हैं या नहीं, भाषण देने के लिए? कल्याण करने के लिए नहीं निकलते? उसके घर जाकर पूछकर आना? उसकी माँ गालियाँ दे रही होती है। उसकी पत्नी तो कहेगी, 'भाई,

उनकी बात ही जाने दो न!' पत्नी ऐसा कहती है लेकिन फिर भी वह वापस बाहर सेवा करने निकल जाता है। ऐसा होता है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : होता है, ऐसा बहुत बार होता है। घर के बजाय दूसरों का कल्याण करने जाते हैं।

दादाश्री : नहीं, जिससे घर का नहीं होता, वह बाहर कुछ कर ही नहीं सकता। फर्स्ट घर में। अपना घर, फिर अपने पड़ोसी, सगे-संबंधी और फिर आगे बढ़े। यह तो बाहर कीर्ति के लिए भटकता रहता है जबकि घर में उसकी माँ तो उसे गालियाँ दे रही होगी। 'अरे, जाने दो न! उसका नाम ही जाने दो न।' जबकि अपना नियम कैसा है? चैरिटी बिगिन्स फ्रॉम होम (परोपकार की शुरुआत घर से होती है)।

प्रश्नकर्ता : क्या ऐसा हो सकता है कि अपना आत्म कल्याण यानी कि आत्मा न जाना हो और अपना कल्याण नहीं किया हो फिर भी उसे भाव हो कि मुझे मेरा करना है और दूसरों का भी करना है?

दादाश्री : हो सकता है न! लेकिन शुरुआत पहले अपने घर से करनी चाहिए। ये तो बाहर का कल्याण करने निकले हैं। ये लोकसेवक, अपने घर में दु:ख देते हैं और जब वे बाहर जाते हैं तो लोग उन्हें 'आइए पधारिए' कहते हैं, वे भी मस्ती में कहते हैं। उसके भी ये हेबिच्यूएटेड हो गए हैं। कल्याण तो उसे कहते हैं, कि कोई अपमान करे फिर भी वापस उसके वहाँ कल्याण करने जाए। इनका एक दिन अपमान करके तो देखो?

कषाय सहित प्ररूपणा, नर्क में ले जाए

प्रश्नकर्ता : सामने भी नहीं देखता तो कल्याण करने की बात ही कहाँ रही?

दादाश्री : अगर अपने घर में ही क्लेश रहे तो जगत् तक कैसे पहुँच सकेंगे? जब तक क्लेश है तब तक संसार में भटकना है। अभी इस काल में ऐसा है कि उपदेश देने जाएँ तो बंधन हो जाएगा। कषाय सहित प्ररूपणा, वह नर्क में जाने की निशानी है!

बहुत स्ट्रोंग वाक्य कह रहा हूँ लेकिन इसके पीछे हमारी करुणा है! अरे, यह नर्क में जाने का कहाँ से खोज निकाला? प्ररूपणा करने (उपदेश देने) बैठ गए! जैसे कि खुद का कल्याण हो गया हो, इसलिए लोगों का कल्याण करने बैठ गए! कषाय हैं या नहीं? कषाय हैं और प्ररूपणा करते हो तो नर्क में जाओगे।

ज्ञानी कड़क वाणी से निकालते हैं रोग

हम वीतरागों की ऐसी कड़क वाणी नहीं होती लेकिन क्या करें? उनके रोग को निकालने के लिए भीतर गहरी वीतरागता के साथ, संपूर्ण करुणाभरी वाणी निकल जाती है! उसमें उनका भी दोष नहीं है, उनकी इच्छा तो मोक्ष में जाने की है लेकिन नासमझी के कारण उल्टा हो जाता है। काल ही बड़ा विचित्र आया है। उसकी आँधी की लपेट में सभी आ गए हैं। हमें तो अपार करुणा रहती है। हमें सभी निर्दोष ही दिखाई देते हैं क्योंकि हम खुद निर्दोष दृष्टि करके पूरे संसार को निर्दोष देखते हैं।

तात्त्विक दृष्टि से देखा जाए तो दोष किसी का भी नहीं है, संयोग ऐसे हैं, इसलिए हम इतना कठोर बोल रहे हैं। वह भी, सामने वाले के लिए संपूर्ण करुणा भाव होने के कारण, उसका रोग निकालने के लिए ऐसी वाणी बोल रहे हैं। यह वाणी राग-द्वेष रहित है। वीतराग वाणी है। जो इस वाणी को सुने और धारण (ग्रहण) करे उसका कल्याण ही हो जाएगा। यदि इस वाणी को धारण करे न, तो सारा रोग जुलाब के रास्ते

से निकल जाएँगे! जो अवगुण के परमाणु हैं न, वे सभी जुलाब के रास्ते से निकल जाएँगे!

भावना अपनी, कार्य कुदरत का

प्रश्नकर्ता : जिसका कल्याण हो चुका हो, वही दूसरों का कल्याण कर सकता है न?

दादाश्री : और कौन कर सकता है?

प्रश्नकर्ता : ये सभी जो भावनाएँ करते हैं....

दादाश्री : भावना ही करनी है, बाकी और क्या करना है? कल्याण नहीं करना है। कल्याण हो या नहीं हो, आपको भावना ही करनी हैं।

आप किस तरह से कल्याण कर सकते हो, जहाँ पर संडास जाने की भी शक्ति नहीं है, वहाँ? मुझे जो सुख मिला, वैसा ही सुख लोगों को मिले, ऐसे भाव करने हैं। हमें तो जगत् कल्याण की सिर्फ भावना ही करनी है, फिर कार्य तो कुदरत करेगी। खुद का कल्याण होने के बाद (कल्याण की) ऐसी भावना उत्पन्न होती है। खुद का कल्याण हो जाए और जब क्लेश न रहा हो तब वह जगत् कल्याण की भावना करता है।

आत्म कल्याण होने के बाद जगत् कल्याण किया जा सकता है

प्रश्नकर्ता : प्रत्येक व्यक्ति का पहला फर्ज़, आत्म कल्याण करना है या जगत् कल्याण करना?

दादाश्री : ऐसा है न कि आत्म कल्याण करे तो उत्तम है, तभी वह जगत् कल्याण कर सकेगा। वर्ना फिर भी यदि आत्म कल्याण नहीं हुआ हो, तब भी जगत् कल्याण नहीं लेकिन लोक कल्याण की बात करनी चाहिए। आत्म कल्याण होने के बाद सारा कल्याण कर सकता है। जो खुद का ही कल्याण नहीं कर सकता वह दूसरों का कल्याण कैसे कर सकेगा? आत्म कल्याण अर्थात् खुद का कल्याण! आत्मा अर्थात् सेल्फ और सेल्फ का कल्याण वह खुद का कल्याण। जो खुद का कल्याण कर सकता है, वही दूसरों का कल्याण कर सकता है।

प्रश्नकर्ता : आत्म कल्याण, यदि अपना खुद का ही कल्याण करने की भावना करें तो क्या वह स्वार्थ नहीं है? सेल्फिश कन्सिडरेशन (स्वार्थी सोच)नहीं कहलाएगा?

दादाश्री : नहीं, स्वार्थ नहीं कहलाएगा। यदि पहले अपना कर लिया होगा न, तभी दूसरों का कर सकेगा। यदि खुद का ही कल्याण नहीं हुआ हो और खुद ही पूरा दिन अशांत रहता हो, तो वह क्या कर सकेगा?

जब इस जगत् के किसी भी द्वंद्व का असर नहीं हो, किसी भी चीज़ का असर नहीं हो और 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा भान हो जाए तो हो गया कल्याण!

ज्ञानी द्वारा होता है आत्म कल्याण

प्रश्नकर्ता : एक संत कहते थे कि लोक कल्याण करने के बजाय आत्म कल्याण ही श्रेष्ठ है।

दादाश्री : ठीक है, लेकिन जब तक आत्म कल्याण नहीं होता, तब तक समाज कल्याण करते रहना। आत्म कल्याण तो कठिन है। आत्म कल्याण तो कभी हो ही नहीं सकता। चाहे अनंत अवतार भटके, हिमालय में भटके, कहीं भी भटके लेकिन किसी भी जगह पर आत्म कल्याण नहीं है। वह सब बाहर का ही है। ये सभी बड़े-बड़े आचार्य भी भटक गए हैं न! ये इतनी खोज करते हैं कि 'मैं आत्मा हूँ,' ऐसा जानते हैं, फिर भी नहीं हो पाता न! नहीं हो पाती वह चीज़! वह कोई आसान चीज़ नहीं है। वह तो जब कभी ज्ञानीपुरुष होते हैं, जिनके अहंकार और बुद्धि सब

खत्म हो चुके हों, वहाँ पर आत्म कल्याण हो सकता है। क्रमिक मार्ग में हज़ारों सालों में ज्ञानी होते हैं लेकिन वे खुद दूसरों को प्रकाश देते हैं और फिर खुद आगे के लिए प्रकाश (लाइट) माँगते हैं। अर्थात् उन्हें खुद को आगे के प्रकाश (लाइट) की ज़रूरत पड़ती है।

प्रश्नकर्ता : दादा, लेकिन जो आत्म कल्याण कर ही रहा है या फिर जिसकी आत्म कल्याण करने की भावना है, उससे सहज ही लोक कल्याण नहीं हो जाएगा?

दादाश्री : उनके द्वारा ही कल्याण हुआ है।

प्रश्नकर्ता : फिर क्या उसे करने के लिए जाना पड़ता है? उसके लिए उसे अलग क्षेत्र पसंद करना पड़ता है?

दादाश्री : नहीं, उससे सहज रूप से होता ही रहता है। उसके वातावरण से ही होता रहता है। उसकी वाणी से, उसके वर्तन से, उसके वातावरण से।

भगवान ऐसा कहते हैं कि यदि तुझे किसी को भी प्राप्ति करवानी हो तो तुझे कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। तेरे आचार-विचार देखकर ही सामने वाले को लाभ हो जाएगा, तुझे देखने से ही लाभ हो जाएगा।

जगत् कल्याण विदाउट इगोइज़म

प्रश्नकर्ता : आत्म कल्याण करने वाले के वाणी, वर्तन और विचार ऐसे तो कैसे होते हैं कि उसके वातावरण से ही दूसरों का कल्याण हो जाता है?

दादाश्री : वे सब मनोहारी होते हैं, मन का हरण करने वाले होते हैं, मन प्रसन्न हो जाता है। उनका विनय अलग ही प्रकार का होता है। वह वाणी अलग ही प्रकार की होती है। वर्तन विदाउट इगोइज़म (निर्‌हंकारी) होता है। बिना इगोइज़म का वर्तन संसार में शायद ही कभी देखने को मिलता है, वर्ना मिलता नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : हमारा वर्तन भी ऐसा ही होना चाहिए न? अलबत्ता, जो जगत् कल्याण का ध्येय है या जो सब से उच्च प्रकार का ध्येय है, दादा का ध्येय सभी से उच्च तरह का है लेकिन फिर भी वर्तन में कोई कह नहीं सकता कि दादा के वर्तन में कहीं किंचित्मात्र भी कोई भूल है। दादा ऐसे नहीं हैं कि किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी दुःख दे सकें।

दादाश्री : इस ज्ञान के प्रताप से सबकुछ हो सकता है। मैं आपको यह समझाऊँगा कि किस तरह रहना है और यदि पार उतर गए, तब तो अति उत्तम है। आपका कल्याण हो जाएगा!

ज्ञानी का ज्ञान समझने से होता है कल्याण

ज्ञानीपुरुष के एक ही वाक्य के अनुसार पूरी ज़िंदगी बीते न तो कल्याण कर देगा। यदि ज्ञानी का एक ही वाक्य अंदर उतर जाए तो पूरी ज़िंदगी का कल्याण कर देगा। यों कभी ज्ञानीपुरुष होते नहीं हैं और यदि होते हैं तो बुद्धि वाले ज्ञानी होते हैं। बुद्धि वाले ज्ञानी नहीं चलेंगे। बुद्धि वाले प्रतिद्वंद्विता वाले होते हैं, एक से बढ़कर एक होते हैं। जो बुद्धि रहित ज्ञानी होते हैं, वे पूर्ण होते हैं। हम में बुद्धि नहीं है, बिल्कुल भी नहीं है।

जहाँ बुद्धि पहुँचती है वह संसारियों के घर की बात है। सभी ने बुद्धि के अंदर की (मर्यादा में रहकर) बात की है। जहाँ बुद्धि नहीं पहुँचती वह खुदा के घर की बात है और जिसमें बुद्धि का अभाव हो गया और बुद्धि गई, उसका कल्याण हो जाता है। जब से खुदा मिले तभी से हमारी बुद्धि खत्म हो गई। खुदा को देखा कि हमारी बुद्धि लुप्त हो गई। खुदा के पास बैठे रहने से

आनंद रहता है और खुदा क्या कहते हैं? 'एक संदेश दो ताकि पूरा जगत् वापस लौटे। पूरा जगत् जल रहा है और वह साइन्टिफिक तरीके से दो।' खुदा ने मुझे यह साइन्टिफिक तरीके से दिया है। उसी अनुसार मैं जगत् को यह देना चाहता हूँ।

मूलत: वस्तु स्थिति में, मैं जो कहना चाहता हूँ, यदि वह समझ लोगे न तो कल्याण हो जाएगा! प्रत्येक वाक्य में मैं क्या कहना चाहता हूँ, यदि वह पूरी बात समझ में आ जाए तो कल्याण हो जाएगा!

मुक्त हास्य से होता है कल्याण

जब तक एक भी व्यक्ति दोषित दिखाई दे, तब तक हास्य उत्पन्न नहीं होता। पूरा जगत् निर्दोष दिखेगा, तब मुक्त हास्य उत्पन्न होगा। भार रहित का मुक्त हास्य उत्पन्न हो ही नहीं सकता ऐसा नियम है। मुक्त हास्य से मनुष्य कल्याण कर देता है। एक बार मुक्त हास्य के दर्शन कर ले न तो भी कल्याण हो जाए! वह तो अब खुद ही उस रूप होना पड़ेगा। खुद वैसा हो जाए तो सब राह पर आ जाएगा। हमेशा सिर्फ पर्सनालिटी ही काम नहीं करती। खुद का जो चारित्र है वह बहुत बड़ा काम करता है। इसीलिए तो शास्त्रकारों ने कहा है कि ज्ञानीपुरुष एक उँगली पर पूरा ब्रह्मांड उठा सकते हैं क्योंकि चारित्रबल है। चारित्रबल मतलब क्या? निर्दोष दृष्टि। निर्दोष दृष्टि दादा से सुनी और आपको अभी प्रतीति में तो आई है, हमें अनुभव में है। प्रतीति आपको ज़रूर बैठी है लेकिन अभी वर्तन में आते हुए देर लगेगी न? बाकी मार्ग यही है। मार्ग आसान है और ऐसा नहीं है कि कोई परेशानी आए।

किसी का भी मन आप से ज़रा-सा भी जुदा हुआ कि आप 'केवलज्ञान' से जुदा हुए! कम से कम लोगों के मन हम से जुदा होने चाहिए। वर्ना तब तक 'मुक्त हास्य' नहीं आ पाएगा। 'मुक्त हास्य' के बिना जगत् वश नहीं हो सकेगा और तब तक जगत् का कल्याण नहीं होगा।

मन को दो सत्संग रूपी खुराक

सत्संग में हम यदि मन को (जगत् कल्याण रूपी) खुराक नहीं देंगे तो वह हमें खा जाएगा। उसे खुराक देनी ही पड़ती है जबकि व्यवहार में तो हमें यों ही खुराक मिलती रहती है। कोई कुछ कहे उससे पहले तो हम दे देते हैं। इस तरह मन को खुराक मिलती रहती है। इस सत्संग में कौन सी खुराक मिलती है? इसमें क्लेश नहीं है। इसमें वापस देने का है ही नहीं न!

जब मन के साथ थोड़ी बहुत बातचीत करते हैं, तब मन का दूसरा काम बंद हो जाता है। आत्मा स्थिर हो जाता है। फिर यदि पढ़ना हो तो पढ़ भी सकता है। तब अगर वह पढ़े तो उसे आत्मा का उपयोग करना कहा जाएगा। वर्ना यदि स्थिर हो जाए, वह भी आत्मा का उपयोग कहलाएगा।

इसलिए पूरे दिन भीतर बुलवाते रहना है और मन को काम सौंपते ही रहना है। यदि वह दूसरी खुराक खाने नहीं जाता तो वह वीतराग हो गया। दूसरी खुराक (किसी के दोष, नेगेटिव देखना) खा रहा हो, तब अगर हम उसे जगत् कल्याण का काम सौंपें न तो दोनों में विरोधाभास होगा। उससे यह सब उड़ जाएगा। वाणी बोलता है अलग और मन सोचता है अलग, वाणी बोलने से वे मन के विचार और सब उड़ जाते हैं। फिर किसी जन्म में से ऐसा ताल नहीं मिलेगा।

प्रश्नकर्ता : मन को तो इस सत्संग की खुराक ही चाहिए।

दादाश्री : हाँ! मन का स्वभाव ऐसा है कि यह (जगत् कल्याण का काम) पकड़ता नहीं

और पकड़ने के बाद छोड़ता नहीं। ऐसे पटा-पटाकर चारों तरफ से सब पकड़वा दिया, इसे यदि पकड़ लिया तो फिर वह छोड़ेगा नहीं वह अच्छा स्वभाव कहलाएगा न!

प्रश्नकर्ता : फिर यदि सत्संग न मिले तो मन उकता जाता है।

दादाश्री : हाँ, पहले तो मन इसे पकड़ता नहीं है क्योंकि यदि मन यह पकड़ ले तो मन का मरण हो जाता है। खुद के मरने की इच्छा कोई नहीं करता। लेकिन यदि हम उसे कुछ भी समझाकर पिला दें तो फिर वह ऐसा हो जाएगा। फिर इसे छोड़ेगा नहीं। यदि नहीं छोड़े तो समझना कि करेक्ट हो गया है।

प्रश्नकर्ता : फिर भी मन का स्वभाव पिछला स्वभाव बताता है।

दादाश्री : वह तो बताएगा न! ये सभी (महात्मा) अंतर्मुखी हो गए हैं। अंदर क्या हो रहा है? वह सब दिखाई देता है।

मन को पिरोना जगत् कल्याण के काम में

प्रश्नकर्ता : जगत् कल्याण की बात की, मन से कहें कि जगत् कल्याण करना है तो उसमें उसे जल्दी तो रहेगी न?

दादाश्री : वास्तव में उसे उसमें मज़ा आएगा। उसके कोने बहुत बड़े हैं। उसका पूरा सर्कल बहुत बड़ा है, हमने अपने मन को उसी में रखा है। वह दिन-रात अपने आप कोने ढूँढ़ता ही रहेगा। फलाँ भाई को ज्ञान दें, फलाँ भाई को ऐसा करें, वह अपने आप ही सब ढूँढ लेता है और अपना काम तो होता ही रहता है। वह स्टेडी (स्थिर) रहता है और हमें परेशान नहीं करता। वह जीवित रहता है। वह आनंद में रहता है और हमें भी आनंद में रखता है।

अब ऐसी (कल्याण की) भावना करनी चाहिए। उसके लिए मन को क्या खुराक देनी चाहिए कि जगत् का कल्याण हो, उस 'जगत् कल्याण के काम में निमित्त बनूँ' इसलिए अगर मन को काम दोगे न तो मन ऐसा काम करता रहेगा। उसे एक काम दे देना और जगत् कल्याण वही अपना काम है। खुद का कल्याण अर्थात् क्या? जगत् का कल्याण वही अपना कल्याण है। इसलिए काम दे दो न! तो उसके लिए ऐसा करेगा, वैसा करेगा। अगर कोई जा रहा हो तो कहेगा, 'चलो, दादा के वहाँ।' फिर मन भी वैसा ही काम करेगा।

प्रश्नकर्ता : मन में ऐसा होता रहता है कि अब यह जल्दी से पूरा हो जाए।

दादाश्री : मन का स्वभाव तो ऐसा है कि जिसमें लगाओ उसमें जल्दबाज़ी करता है। अभी यदि गाड़ी में जाना हो तो वहाँ जल्दी करेगा। उतरना होगा वहाँ जल्दी करेगा। जहाँ रखो वहाँ, मन का स्वभाव ही जल्दबाज़ी वाला है। 'जल्दी करो, जल्दी करो,' कहेगा। 'जल्दी करके तो यह दशा हो गई है मेरी,' कहना लेकिन वह मन का स्वभाव ही है।

अब वह मन उछल-कूद क्यों करता है? क्योंकि मन को (जगत् कल्याण का) कोई काम नहीं दिया है। मन को काम देना चाहिए। मन खाली बैठे तो कहता है 'जल्दी करो, जल्दी करो,' कहाँ जल्दी करो? तब कहना, 'मोक्ष में'। तो भाई, अभी तक तो इस तरफ (संसार में) 'जल्दी करो, जल्दी करो,' कह रहा था न!

अर्थात् मन विरोधाभासी है। उसमें एक ही तरह का नहीं है। जिस तरफ उसका मुँह घुमा दो, वह उसी तरफ चलने लगता है। आपको घुमाना आना चाहिए। यदि उसे मार-पीटकर कहें, 'तू घूम,

तू घूम', तो वह नहीं घूमेगा। आप उसे घुमा दो न! मन का स्वभाव ऐसा है! उसे पहचानकर काम लेना पड़ेगा। उसका विरोधी बनने में फायदा नहीं है।

यदि मन को जगत् कल्याण में पिरो दोगे तो मन ठिकाने पर रहेगा! चित्त को ठिकाने पर रखने के लिए 'ज्ञानीपुरुष' की 'कृपा' प्राप्त करनी पड़ती है। जगत् कल्याण करने वाले के घर में तो कभी दुःख रहता ही नहीं।

स्थिर हुए दिल से होता है कल्याण

'मानुष *खोजत मैं फिरा,* मानुष *का बड़ा सुकाल।*' '*जाको देखी दिल ठरे, तां का पड्या दुकाल।*' कबीर जी कहते हैं, 'लोग आमने-सामने टकराते थे लेकिन पूरी दिल्ली में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं देखा जिससे दिल को शांति हो जाए इसलिए भटकने के लिए दूसरे गाँव गया।' कहते हैं। अर्थात् दिल शांत हो जाए, ऐसे व्यक्ति मिल जाएँ तो अपना कल्याण हो जाएगा और युवा वगैरह सभी बदल जाएँगे। यहाँ मेरी उपस्थिति में तो ये युवा लोग हटते ही नहीं है। उन्हें शादी नहीं करनी है।

ज्ञानी के दर्शन से जन्मोंजन्म का कल्याण

लोग सबकुछ करते हैं, मंदिर में जाते हैं, दर्शन करते हैं वह ठीक करते हैं। उन्हें शांति चाहिए। उन्हें कहाँ पर दर्शन करने हैं? वे जहाँ दर्शन करने जाएँ न, वहाँ उन्हें शर्म न आए, ऐसा चाहिए। जीवित के सामने उन्हें शर्म आती है और आप कहो मूर्ति के सामने नाचेगा भी सही। अकेला ही नाचता-कूदता है! लेकिन जीवित के सामने उसे शर्म आती है। यदि जीवित के सामने करेगा तो उसका कल्याण हो जाएगा, आत्यांतिक कल्याण हो जाएगा लेकिन ऐसी शक्ति नहीं है न! ऐसा पुण्य नहीं है!

हमारे पाँच ही मिनट के दर्शन से आपका जन्मोंजन्म का कल्याण हो जाए, वैसा है। यहाँ पर सभी भगवान के दर्शन हो जाएँ, वैसा है। आपको जिनके दर्शन करने हों, करना।

निर्मलता-प्योरिटी से जगकल्याण

प्रश्नकर्ता : लोगों का कल्याण किस तरह से होता है?

दादाश्री : कल्याण करने में एक ही चीज़ है कि जो खुद का कल्याण कर ले, वह बिना बोले दूसरों का कल्याण कर सकता है! अतः करना कितना है? 'ज्ञानीपुरुष' के पास खुद का कल्याण कर लेना है। फिर खुद कल्याण स्वरूप हुआ कि बिना बोले (उपदेश दिए बगैर) लोगों का कल्याण हो जाएगा और जो लोग बोलते रहते हैं, उससे कुछ नहीं होता, सिर्फ भाषण करने से, बोलते रहने से कुछ नहीं होता। बोलने से तो बुद्धि इमोशनल हो जाती है। यों ही उनका चारित्र देखने से, उस मूर्ति को देखने से ही सभी भावों का शमन हो जाता है यानी कि उन्हें तो सिर्फ खुद ही उस रूप हो जाने जैसा है। 'ज्ञानीपुरुष' के पास रहकर उस रूप होना है। ऐसे पाँच ही तैयार हो जाएँ तो वे कितने ही लोगों का कल्याण कर सकेंगे! बिल्कुल निर्मल बन जाना चाहिए और 'ज्ञानीपुरुष' के पास निर्मल बन सकते हैं।

लोगों का कल्याण कब होता है? जब हम प्योर हो जाएँ तब, बिल्कुल प्योर! प्योरिटी ही सभी को, पूरे संसार को आकर्षित करती है! प्योरिटी! प्योर चीज़ संसार को आकर्षित करती है जबकि इम्प्योर चीज़ संसार को फ्रेक्चर कर देती है। इसीलिए प्योरिटी लानी है।

आज्ञा में रहो और भावना करो कल्याण की

अभी आज्ञा में रहो, बस इतना ही। जब उसका फल आएगा तब न! अभी पढ़ रहे हैं फर्स्ट

स्टेन्डर्ड में, सेकन्ड स्टेन्डर्ड या चौथे में, पाँचवें में, बेकार ही क्यों उछल-कूद करें, मैट्रिक तक! अभी तो हास्य उत्पन्न नहीं हुआ है, टेन्शन गए नहीं हैं। समझना अलग चीज़ है लेकिन बिना बात के बेकार ही भटकना, छलांग लगाना, इससे तो नीचे जाकर खो जाएँगे। अत: आज्ञा में रहकर धीरे-धीरे आगे बढ़ो न! आज्ञा में रहना और कल्याण की भावना करना। यह इस जन्म में पूरा होगा या अभी और कितने जन्म होंगे, उसका ठिकाना नहीं है न! बेकार ही उछल-कूद क्यों करें!

कल्याण के लिए परखकर देखो अत:करण

जितना हो उतना जगत् का कल्याण करना है। उसका भी समय परिपक्व होगा न? उसके लिए अगर क्या हम जल्दबाज़ी में भाग-दौड़ करेंगे और लिफ्ट में चढ़ेंगे-उतरेंगे तो हो जाएगा क्या?

तब तक अंदर पूरी तरह परखकर देख लेना है कि भावना जगत् कल्याण की है या मान की? लालच नहीं होगा, तब जगत् कल्याण होगा। खुद के आत्मा को परखकर देखे तो सबकुछ पता चले, ऐसा है। शायद अंदर मान पड़ा होगा तो वह भी निकल जाएगा। किसी मंत्री को, बाहर सब अच्छा हो और घर में दु:खी हो, तो अगर उसे सत्ता दी जाए तो वह एक लाख, दो लाख खा जाएगा लेकिन बाद में अघा जाएगा न? और अपना तो यह विज्ञान है इसलिए अब जो मान है, वह निकाली माल है न! वह धीरे-धीरे खत्म हो जाएगा, फिर भी तब तक पूरी जागृति रखनी पड़ेगी। कोई गाली दे, अपमान करे फिर भी मान नहीं जागना चाहिए। कोई धौल लगाए फिर भी मान क्यों जागे? हमें तो जानना चाहिए कि सात धौल लगाई या तीन? ज़ोर से लगाई या धीरे से? ऐसे जानना है। खुद के स्वभाव में आना तो पड़ेगा न? आपको तो सुबह में तय करना है, कि आज पाँच अपमान मिलें तो अच्छा और फिर पूरे दिन में एक भी नहीं मिले तो अफसोस रखना, तब मान की गाँठ पिघलेगी। अपमान हो, उस समय जागृत हो जाना।

अगर एक ही सच्चा इंसान होगा तो जगत् कल्याण कर सकेगा! संपूर्ण आत्मभावना होनी चाहिए। एक घंटे तक भावना करते रहना और अगर टूट जाए तो जोड़कर वापस शुरू कर देना। यह भावना की है तो भावना का जतन करना! लोगों का कल्याण हो इसलिए त्यागी वेष, दीक्षा लेने की इच्छा है तुम्हें। अगर मन नहीं बिगड़ता हो तो फिर दीक्षा लेने में हर्ज नहीं।

कल्याण की भावना जीत लेती है विषय को

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आप मुझे विधि कर दीजिए, मुझे ज़िंदगीभर के लिए ब्रह्मचर्य व्रत लेना है।

दादाश्री : तुझे दिया जा सकता है और तू पालन कर सकेगा, ऐसा स्ट्रोंगपन है तुझ में, फिर भी जब तक हम विधि न कर लें, तब तक यह भावना करना। दादा तो सोच-समझकर चलते हैं, बहुत सोच-समझकर चलते हैं, इसलिए अभी तू भावना करना, उसके बाद देंगे। इस काल में तो पूरी ज़िंदगी का ब्रह्मचर्य देने जैसा नहीं है। देना ही जोखिम है। साल भर के लिए दे सकते हैं इसलिए भावना करना और हम तुझे भावना करने की शक्ति दे रहे हैं। सही तरीके से भावना करना, जल्दबाज़ी मत करना। जितनी जल्दबाज़ी, उतना ही कच्चा। हम तो किसी को भी ऐसा नहीं कहते कि ब्रह्मचर्य पालन करना, ये आज्ञा पालन करना। ऐसा कह ही कैसे सकते हैं? यह 'ब्रह्मचर्य क्या चीज़ है?' वह तो हम ही जानते हैं! यदि तेरी तैयारी हो तो हमारा वचनबल है, वर्ना फिर जहाँ है वहीं पड़ा रह न! यदि यह ब्रह्मचर्य व्रत लेकर संपूर्ण करेक्ट पालन करेगा तो वर्ल्ड में अनोखा

स्थान प्राप्त करेगा और एकावतारी बनकर यहाँ से सीधा मोक्ष जाएगा। हमारी आज्ञा में बल है, ज़बरदस्त वचनबल है। यदि तू कच्चा नहीं पड़ेगा तो व्रत नहीं टूटेगा, इतना अधिक वचनबल है।

जगत् का कल्याण अधिक से अधिक कब हो सकता है? त्याग मुद्रा हो, तब अधिक होता है। गृहस्थ मुद्रा में जगत् का कल्याण अधिक नहीं हो सकता, ऊपर-ऊपर सब होता है लेकिन भीतर में सारी पब्लिक प्राप्ति नहीं कर पाएगी! ऊपर-ऊपर के सभी, बड़े-बड़े वर्ग (पुण्यशाली लोग) के लोगों को प्राप्ति हो जाती है लेकिन पब्लिक को प्राप्ति नहीं हो पाती। त्याग अपने जैसा होना चाहिए। अपना त्याग, अहंकारपूर्वक नहीं है न! और यह चारित्र तो बहुत उच्च प्रकार का कहलाता है!

ये लड़के दीक्षा लेने की भावना वाले हैं। अंदर खुद का मोक्ष तो हो ही गया है इसलिए उसे ढूँढने की तो इच्छा होती ही नहीं न! खुद का मोक्ष हुआ हो तो जगत् कल्याण करने की भावना होती है, नहीं तो अगर खुद का ही कल्याण नहीं हुआ हो, वहाँ जगत् कल्याण करने की भावना कैसे होगी? ये ब्रह्मचारी क्या कहते हैं कि, 'हमारा तो कल्याण हो गया, अब हमें जगत् का कल्याण करना है तो हमें क्या करना चाहिए?' तब मैंने उनसे कहा, 'अब शादी कर लो।' तब वे कहते हैं कि 'नहीं, हमें शादी तो करनी ही नहीं है। शादी करने से जगत् का कल्याण करने में दिक्कत आएगी, ऐसा है।' तब मैंने उनसे कहा कि, 'तो तुम ब्रह्मचर्य पालन करो तो तुम जगत् का कल्याण कर सकोगे।'

ऐसा कोई नियम नहीं है कि जवानी में ही ब्रह्मचर्य होना चाहिए। जवानी का ब्रह्मचर्य, वह तो बहुत उत्तम चीज़ है। मैं तो कहता हूँ कभी भी ले लेना। अरे! वृद्धावस्था हो और मरने से दस दिन पहले ब्रह्मचर्य व्रत ले तो भी कल्याण हो जाएगा और वह ब्रह्मचर्य व्रत भी ज्ञानी के हाथों होना चाहिए। जो सर्वांग ब्रह्मचारी हैं, ऐसे ज्ञानी के हाथों ही व्रत दिया जाना चाहिए। इसमें फिर ऐसा नहीं है कि व्रत ले ही लेना चाहिए, इसमें सिर्फ अपनी भावना चाहिए। करना चाहिए कहते हैं लेकिन करने से होता नहीं है। यदि आप आज ऐसा कहें कि मुझे भी ब्रह्मचर्य व्रत लेना है लेकिन ऐसा हो नहीं सकता। भावना करते रहना चाहिए तो कभी उदय में आएगा और जब उदय आए तब ब्रह्मचर्य व्रत लेना। भावना की है तो समय आने पर उदय अपने आप आकर खड़ा रहेगा ही! यह जो आपकी जगत् कल्याण की भावना है, वही आपको विषय पर जीत दिलाएगी।

इसलिए हम चेतावनी देते हैं कि इस **ढलान पर चढ़ना** हो तो यह रास्ता है, वर्ना वह ढलान तो है ही भाई! और इस ढलान पर चढ़ना हो तो लोगों का काम भी निकल जाए ऐसा है क्योंकि जगत् का कल्याण होने में ब्रह्मचर्य व्रत के बिना कुछ भी नहीं हो सकता, बाकी खुद का कल्याण कर सकते हैं। अत: यह ब्रह्मचर्य व्रत तो सब से बड़ा व्रत है।

ब्रह्मचर्य मतलब *पुद्गलसार* और अध्यात्मसार मतलब शुद्धात्मा। जिसे ये दोनों मिल जाएँ, उसका तो कल्याण ही हो गया न!

कल्याण की भावना भी हितकारी

प्रश्नकर्ता : दादा, मेरे मन में जगत् कल्याण की भावना रहा करती है लेकिन अभी तो ऐसी स्थिति है कि पाँच हज़ार भी नहीं दे सकता अथवा तो कोई अच्छा मौका हो और उसमें भी ऐसी ही भावना रहे कि यदि मेरे पास कुछ पैसा आए तो मैं लाख रुपए दे दूँ, पाँच लाख रुपए दे दूँ। इससे कुछ फायदा होगा क्या?

दादाश्री : फायदा होगा न! मेरे पास जब आए तब लाख दे दूँ, दो लाख दे दूँ। वह जो कहता है न, अब जब आते हैं तब नहीं दे पाते। जब आता है तब लोभ घुस जाता है लेकिन वह जो कहता है, वह व्यर्थ नहीं जाएगा। उससे भावकर्म बंधते जाते हैं। 'देना है,' सिर्फ ऐसी भावना हुई तो भी बहुत हो गया। देना है अगर ऐसी भावना हो न, तब तो राजा कहलाएगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, कुछ लोग ऐसे होते हैं कि वे सिर्फ किसी जगह पर बैठकर जगत् कल्याण की भावना ही करते रहते हैं। उसके पास खुद की ऐसी कोई शक्ति नहीं होती लेकिन वह बैठे-बैठे जिसे भी देखता है उसके लिए वह ऐसा ही सोचता है कि 'इसका भला हो, इसका दु:ख चला जाए,' क्या तो उससे बहुत बड़ा पुण्य बंधेगा?

दादाश्री : बहुत फायदा होगा। पैसे दे या न भी दे, उसमें कोई हर्ज नहीं है लेकिन भावना से बहुत बड़ा पुण्य बंधता है। वर्ना दिनभर लोगों के मन में क्या होता है कि 'इसका कब बिगड़े अब।' जिससे नहीं बनती, उसके लिए ऐसा ही ध्यान में रहता है कि उसका कब बिगड़े!

प्रश्नकर्ता : दादा, श्रीमद् राजचंद्र जी का एक उदाहरण आता है न कि अगले दिन उसके (माल के) भाव घट गए थे। जिससे माल खरीदा था उसे नुकसान हो जाता तब रात को ही उसे जाकर कह आए कि तू तेरा माल मत देना और सौदे का कागज़ वापस दे दिया।

दादाश्री : हाँ। उसे दे दिया। सभी ऐसा ही समझते हैं कि ' इस तरह से कोई नहीं दे सकता।' हर किसी को ऐसा ही लगता है न!

किसे पड़ी होती है? इन कृपालुदेव को पड़ी थी। उनके मन में तो अभी भी इच्छा है कि लोग मोक्ष की प्राप्ति करें। अभी भी उन्हें अपने फॉलोअर्स पर इतना भाव है कि 'इन लोगों का कल्याण हो जाए तभी मुझे आनंद होगा और उसी में मेरा हित है।' पूरे संसार का कल्याण करने की उनकी भावना थी। उनकी वह भावना एक दिन अवश्य पूरी होगी।

भावना के अनुसार मिलेगा नया जन्म

मेरी जितनी भी जायदाद है, उसका उपयोग जगत् कल्याण के लिए हो, ऐसी भावना की जाए तो इस भावना के फल स्वरूप प्रकृति वापस सुधरेगी, अगले जन्म में आपका मन बड़ा रहेगा। यह जन्म तो गया लेकिन अब नया तो सुधारो। अत: इस प्रकृति को देखकर आपको नई सुधारनी है। यह आपको सावधान करती है कि अगर पसंद नहीं हो तो नया सुधारो और अगर पसंद हो तो रहने दो। अत: सिर्फ भावना ही करनी है और कुछ नहीं करना है।

मेरी भावना है कि, अगर अब आप टेन्डर भरो तो सीधा भरना। अभी एकाध जन्म बाकी हैं। नहीं तो यदि गाड़ी माँगनी हो तो गाड़ी माँगना। आपका जो होगा, उसी में से माइनस होगा। किसमें से होगा? यह जो आपकी कमाई (मोक्ष मार्ग की कमाई) है न, उसी में से!

कल्याण की भावना करो आग्रह किए बगैर

ज़माना बहुत विचित्र है। इसलिए, हमें भावना रखनी चाहिए कि 'बेटे-बहू सभी का कल्याण हो।' ऐसी भावना रखना लेकिन उसके लिए इतनी ज़्यादा पकड़ नहीं रखना कि उल्टा अपना बिगड़े। दूर रहकर काम लेना। इनमें से कोई भी अपना नहीं बनेगा। सत्युग के लोग तो अलग तरह के थे, ये लोग अलग हैं, ये ऋणानुबंध अलग तरह के हैं, वे ऋणानुबंध अलग तरह के थे। तो फिर ऐसी आशा रखकर क्या करना है।

अपने आत्मा का कुछ कल्याण करो न! इसमें क्या स्वाद आएगा?

हमें तो, ऐसा कह देना चाहिए कि जिससे लोगों का कल्याण हो। वे नहीं मानें तो कोई बात नहीं और बहुत खींचातानी नहीं करनी है। खींचातानी करने की, आग्रह करने की हमें ज़रूरत नहीं है, समझाते रहना है। खुद को क्या अनुभव रहता है वह बताना। फिर उसे मानना या नहीं मानना वह उस पर है। यहाँ हर एक स्ट्रीट पर बोर्ड नहीं होगा तो क्या होगा? यदि उन्हें कहेंगे नहीं तो वैसी ही स्थिति हो जाएगी, इसलिए बोर्ड तो लगाना ही पड़ेगा। उसे यदि उस स्ट्रीट पर जाना हो तो जाए और नहीं जाना हो तो न जाए।

कलियुग में आशा मत रखना। कलियुग में ऐसा करो कि आत्मा का कल्याण हो, वर्ना आगे का समय बहुत विचित्र आ रहा है। अभी हज़ारेक साल अच्छे हैं लेकिन फिर आगे भयंकर आने वाले हैं। फिर कब मौका मिलेगा? इसलिए कुछ आत्मा का कर लो। सब सब की संभालो।

लोगों के कल्याण के लिए प्रकट हुआ अक्रम

प्रश्नकर्ता : यह विज्ञान बुद्धि की नहीं सुनता क्या इसीलिए यहाँ पर सभी नहीं आते? ऐसा है?

दादाश्री : हमें बहुत सारे लोग क्यों लाने हैं? यह भावना है न, यह एक तरह की करुणा है। वह करुणा अपने में है। उसी की हमें बहुत ज़रूरत है, बस! बाकी कुछ हुआ या नहीं, वह नहीं देखना है हमें। करुणा रखना, यह अपना फर्ज़ है। हुआ या नहीं, वह अपने हाथ में नहीं है। व्यवस्थित के ताबे में है। अभी तो यहाँ पर बहुत लोग आएँगे, सभी आएँगे!

अक्रम विज्ञान किसी भी काल में हुआ ही नहीं है। यह तो लाखों लोगों का कल्याण करने को आया है। कितने ही लोग काम निकाल लेंगे और वह भी सभी का निष्पक्षपाती रूप से।

कई लोगों का कल्याण होने को है क्योंकि सहज रूप से कल्याण हो जाए, ऐसा मोक्षमार्ग यदि कभी निकला हो तो इस बार निकला है। पारसी, मुसलमान, सभी को माफिक आ गया न! ऐसा नहीं है कि किसी भी कौम को अनुकूल नहीं आए और सब को माफिक आ जाए ऐसा ज्ञान है!

पुण्यशालियों के लिए 'यह' मार्ग

यह 'अक्रम ज्ञान' तो कुछ ही लोग जो बहुत पुण्यशाली होंगे उनके लिए है। बाकी सभी के लिए 'अक्रम मार्ग से' मोक्ष नहीं है। बाकी सभी को तो उनके 'क्रमिक मार्ग' का बोध देकर उसे वह जो करता हो उसमें ही सरल रास्ता दिखाएँगे। उससे वह ठेठ तक पहुँच जाएगा! यहाँ पर तो जो 'सहज रूप से' आ पहुँचे और अपना पुण्य का पासपोर्ट ले आए, उसे हम ज्ञान दे देते हैं। जिसने 'दादा की कृपा प्राप्त कर ली, उसका काम हो गया!'

'हम' जगत् कल्याण के स्वामी नहीं हैं, निमित्त हैं। जो पुण्यशाली होंगे, वे तो घर बैठे ही लाभ ले जाएँगे! पुण्यशालियों का फल, वही यह 'अक्रम मार्ग' है! नहीं तो अक्रम होता होगा? यह तो जब बाद में इतिहास लिखा जाएगा तब लोग पछताएँगे और सोचेंगे कि 'उस काल में मैं था या नहीं?' फिर वह हिसाब लगाएगा तो पता चलेगा कि 'उन दिनों मैं उन 35 मंज़िल फ्लेट बनाने के काम में पड़ा था!' सभी संयोग आ मिलेंगे लेकिन यह 'अक्रम ज्ञान' का संयोग नहीं मिल सकता। यहाँ पर 'सत् संयोग' है। वह तो ज्ञान मिलने के बाद जब दूसरे ही दिन खुद को स्वयं का अनुभव होता है तभी समझ में आता है।

ऐसा ज्ञान इस साढ़े तीन अरब की आबादी में किसे नहीं चाहिए? सभी को चाहिए लेकिन यह ज्ञान सब के लिए नहीं है। यह तो महापुण्यशालियों के लिए है। यह 'अक्रम ज्ञान' प्रकट हुआ तो, इसमें लोगों के कुछ पुण्य होंगे न! सिर्फ भगवान का आश्रय रखने वाले, भटकते भक्तों के लिए और जिनके पुण्य होंगे न, उनके लिए 'यह' मार्ग प्रकट हुआ है। यह तो बहुत पुण्यशालियों के लिए है और यहाँ पर जो सहज रूप से ही आ जाएँ और सच्ची भावना से माँगे, उन्हें दे देते हैं लेकिन इसके लिए लोगों को कुछ कहने नहीं जाना है। इन 'दादा' की और उनके महात्माओं की हवा से ही (उपस्थिति से, उनके निमित्त से) जगत् कल्याण हो जाएगा।

हम कल्याण के 'निमित्त' मात्र

ऐसा है न, कि हम इस जगत् कल्याण के कर्ता नहीं हैं, हम तो निमित्त हैं।

हम जगत् कल्याण की भावना करते हैं, जो एक दिन रूपक में आएगी। जो कुछ भी भाव होते हैं वे रूपक में आए बगैर नहीं रहते। क्रिया करने की ज़रूरत नहीं है, रूपक अपने आप आता है। इसलिए भावना कीजिए।

हमारी भावना है, 'पूरे जगत् का कल्याण हो।' ऐसी भावना के कर्ता नहीं हैं। अर्थात् जिसके हिस्से में जो निमित्त हो, वह निमित्त भले ही हो, न हो तो भले ही हो और इस संसार में पूरे जगत् का कल्याण करने वाला, पूरे जगत् को मोक्ष में ले जाने वाला संसार में कोई हुआ ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : किसी को अधिकार ही नहीं दिया।

दादाश्री : देने से वह अधिकार चले, ऐसा है ही नहीं क्योंकि इस संसार में एक डिग्री से प्रवाहित होते-होते तीन सौ साठ डिग्री पर आकर मोक्ष में चला जाता है लेकिन एक डिग्री पर से शुरुआत चलती ही रहती है। यहाँ से तीन सौ साठ डिग्री पर पहुँचकर जितने मुक्त हो जाते हैं, उतने ही दूसरे एक डिग्री में आ जाते हैं इसलिए यह संसार कभी भी बंद नहीं होने वाला या रुकने वाला नहीं। और पूरा संसार मोक्ष में नहीं जा सकता। जो ऐसी बात करता है, उसे मेन्टल हॉस्पिटल में ले जाना पड़ेगा। निमित्त बन सकते हैं कि जगत् का कल्याण करने का निमित्त बनने का अधिकार, भावना करने का अधिकार है।

भावना के परिणाम स्वरूप प्रकट हुआ 'अक्रम'

प्रश्नकर्ता : (दादा आपको जब ज्ञान हुआ फिर जगत् कल्याण की शुरुआत किस तरह हुई?)

दादाश्री : किसी ने नहीं कहा था। पहले से ही भावना थी कि यह जगत् ऐसा नहीं रहना चाहिए, जगत् कल्याण होना चाहिए। ऐसे कारण (भावना की थी) छोड़े कि किसी को ऐसा ज्ञान हो और लोगों का कल्याण हो और फिर यह ज्ञान मुझे ही हो गया। मुझे पता नहीं था कि ऐसा ज्ञान हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यह अक्रम ज्ञान कितने जन्मों का सार है?

दादाश्री : यह जो अक्रम ज्ञान प्रकट हुआ, वह तो बहुत जन्मों का सार मिलकर अपने आप नैसर्गिक रूप से ही यह प्रकट हो गया है।

प्रश्नकर्ता : यह आपको 'बट नैचुरल' (कुदरती) हुआ लेकिन कैसे?

दादाश्री : कैसे यानी उसके सारे साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स आ मिले इसलिए प्रकट हो गया। यह तो लोगों को समझाने के लिए मुझे 'बट नैचुरल' कहना पड़ा।

प्रश्नकर्ता : कौन से एविडेन्स आ मिले?

दादाश्री : सभी बहुत तरह के एविडेन्स आ मिले न! पूरे जगत् का कल्याण होने वाला होगा, वह समय भी परिपक्व हो चुका होगा न!

प्रश्नकर्ता : दादा, आपको हीरा बा के तरफ से जगत् कल्याण के लिए कोई अंतराय नहीं आते थे?

दादाश्री : हीरा बा, खुद ही आशीर्वाद देते थे और हमेशा कहते कि 'सब अच्छा करके आना। सभी लोगों का भला हो ऐसा करना।'

कर्म के उदय ही करवाएँगे

प्रश्नकर्ता : अब कोई सोचे या नहीं, मुझे तो इस जगत् कल्याण के लिए ही जाना है, जगत् कल्याण करना है तो मुझे कहाँ (यह घर-संसार) देखने की ज़रूरत है।

दादाश्री : ऐसा है न यदि ऐसा कहे कि, 'मुझे डॉक्टर बनना है' तो बाप क्या कहेगा? 'नहीं, तुझे अपनी दुकान पर ही बैठना है।' तब वह कहेगा, 'मुझे डॉक्टर बनना है।' अब उसके कर्म के उदय डॉक्टर बनने के हैं और बाप है तो दुकान पर बैठाना चाहता है, अनाज-किराना की। तब वहाँ पर बाप को उस बच्चे को देखते रहना है कि इसमें क्या-क्या इच्छाएँ हैं! इसकी जो भी इच्छाएँ होंगी न, वे उसके कर्म के उदय बोल रहे हैं। 'कमिंग इवेन्टस् कास्ट देअर शैडोज बिफोर।' तब उसे समझ लेना चाहिए। तो क्या उसे नहीं समझना चाहिए? यदि उसे समझ में नहीं आया तो उल्टे सभी पज़ल खड़े हो जाएँगे! कर्म के उदय के आगे तो किसी का नहीं चलता। दशरथ राजा की ऐसी इच्छा नहीं थी कि रामचंद्र जी वन में जाएँ, फिर भी वनवास जाने का प्रश्न खड़ा हो गया। छुटकारा ही नहीं है न!

इसलिए तू आराम से रहना। दादा ने ऐसा कहा है 'सब व्यवस्थित चला रहा है।' प्रयत्न करना लेकिन अब मन में ऐसा भाव रखना कि 'मुझे जगत् कल्याण करना है', 'मुझे सच्चा सुख प्राप्त करके उसे पूर्ण करके और 'जगत् के लोग कैसे यह सुख पाएँ' ऐसी ही भावना रखनी है।

कल्याण स्वरूप होने के लिए व्यवहार सीखना पड़ेगा

अपना यह 'अक्रम विज्ञान' संसार को पता चले तो लोगों का बहुत काम कर देगा क्योंकि ऐसा विज्ञान निकला ही नहीं। इस व्यवहार में, व्यवहार की गहराई में किसी ने भी किसी प्रकार का ज्ञान दिया ही नहीं। व्यवहार में कोई आया ही नहीं। सभी ने निश्चय की ही बातें की। व्यवहार में निश्चय आया ही नहीं। निश्चय, निश्चय में रहा और व्यवहार-व्यवहार में। इस अक्रम विज्ञान ने तो निश्चय को व्यवहार में लाकर रख दिया है और पूरा नया ही शास्त्र बनाया है और वह भी साइन्टिफिक। इसमें किसी भी जगह विरोधाभास नहीं है।

यह अलौकिक विज्ञान है! वह तो व्यवहार में यों आरपार निकल जाना चाहिए। हमारा ज्ञान व्यवहार को पार कर ले ऐसा है। यदि इस विज्ञान को जान लिया जाए तो कल्याण हो जाएगा पूरे जगत् का! (जिसे व्यवहार छुए नहीं, बाधक नहीं हो, वह पार उतर गया।

इन्हें (ब्रह्मचारियों को) वस्तु एक्ज़ेक्टनेस में आ जाती है लेकिन अभी तो व्यवहार में कुछ समझते ही नहीं न! इसलिए अब इन्हें हम व्यवहार सिखाते रहते हैं। व्यवहार नहीं होगा तो कोई बाप भी नहीं सुनेगा। व्यवहार में पास नहीं होंगे तो वह व्यवहार इन्हें उलझा देगा। किसी का कल्याण करना होगा, फिर भी नहीं हो पाएगा। खुद का तो

कल्याण हो जाएगा। अन्य किसी का कल्याण नहीं कर सकेंगे। इसमें तो, अगर व्यवहार होगा, तभी दूसरों का कल्याण कर सकेंगे। इनकी क्या भावना है कि अब हमें जगत् कल्याण करना है इसके लिए उन्हें मुख्यत: व्यवहार की आवश्यकता पड़ेगी।

जितने निश्चय किए हैं, उतने फल मिलेंगे। जगत् कल्याण के लिए प्रयत्न करना है, ऐसा निश्चय किया था, वह आज हमारा बाईस साल से चल रहा है और यह तो अभी और भी रहने वाला है! आज हमने जो तय किया, वही ठेठ तक रहे, उसे निश्चय कहते हैं! तो फिर उसकी लिंक आगे मिल जाती है वापस। यहाँ से अर्थी निकलने से पहले निश्चय बदल दे तो फिर आगे जाकर निश्चय कहाँ से मिलेगा? आगे जाकर उसे टाइम पर निश्चय मिलेगा ज़रूर लेकिन वह सतत् नहीं, पीसीस वाला (टुकड़े-टुकड़े) मिलेगा।

प्रतिक्रमण से हो जाओ साफ

अब यही भावना रखनी है कि जगत् का कल्याण हो और अपने मन में जो उल्टे विचार आएँ उन्हें मिटा देना है और 'किसी को दु:ख न हो' सुबह पाँच बार नियम से ऐसा बोलना और फिर बाहर निकलना। फिर बाकी की सारी ज़िम्मेदारी मैं ले लेता हूँ। फिर जिस किसी को आप से जान-बूझकर दु:ख हो या अन्जाने में दु:ख हो, उसकी जोखिमदारी आपकी नहीं रहेगी। जान-बूझकर हो जाए तो उनका तुरंत ही प्रतिक्रमण कर लेना और अन्जाने में हो गए, वे तो अन्जाने में ही चले जाएँगे, ऐसे कि हमें पता भी नहीं चलेगा। जैसे अगर दो साल के बच्चे की माँ मर जाए तो वह बच्चा कितना रोएगा? वैसा दु:ख अन्जाने में ही भुगत लिया जाता है।

प्रतिक्रमण रूपी विचार (साधन) देते हैं। हमारी आज्ञा से प्रतिक्रमण करोगे तो तेज़ी से कल्याण हो जाएगा। पाप भुगतने पड़ेंगे लेकिन इतने सारे नहीं। सभी महात्माओं की इच्छा है, अब जगत् कल्याण करने की भावना है। हेतु अच्छा है लेकिन फिर भी (किसी को दु:ख हो जाए वह) नहीं चलेगा।

प्रश्नकर्ता : हेतु अच्छा है तो फिर प्रतिक्रमण क्यों करना है?

दादाश्री : अंदर आपका हेतु चाहे सोने का हो लेकिन किस काम का? वह हेतु नहीं चलेगा। हेतु बिल्कुल सोने का हो तब भी व्यवहार से किसी को दु:ख हो जाए तो, प्रतिक्रमण करना पड़ेगा।

हमें भी प्रतिक्रमण करना पड़ता है। भूल हुई कि प्रतिक्रमण करना पड़ता है। कपड़े पर दाग़ पड़े तो धो देते हो न? उसी प्रकार ये कपड़े पर के दाग़ हैं। अर्थात् दुनिया में पश्चाताप के साबुन जैसा और कोई साबुन नहीं है। दादा भगवान की नौ कलमें रखी गई हैं न, वह पूरे जगत् के लिए कल्याणकारी प्रतिक्रमण है।

नौ कलमों से कल्याण के बीज

प्रश्नकर्ता : किसी परिस्थिति में दख्लंदाज़ी हो जाती है या सेन्सिटिव(संवेदनशील) हो जाते हैं तो, उसे रोकने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : प्रतिक्रमण और पछतावा करना चाहिए और भावना करनी चाहिए कि ऐसा नहीं होना चाहिए और ऐसा होना चाहिए। जिसने अपनी ये नौ कलमें सीख लीं, उसका कल्याण हो जाएगा! ये नौ कलमें तो कहीं भी नहीं मिलेंगी। नौ कलमें तो पूर्ण पुरुष ही लिख सकते हैं। जब वे होते हैं तब लोगों का कल्याण हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, नौवीं कलम में हम 'मुझे, जगत् कल्याण करने का निमित्त बनने की परम शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए।' हम

यदि यह कल्याण की भावना करें तो वह किस प्रकार काम करेगी?

दादाश्री : आपका शब्द ऐसा निकलेगा कि सामने वाले का काम हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : आप पौद्गलिक कल्याण की बात कर रहे हैं या 'रियल' (आत्म) के?

दादाश्री : *पुद्गल* का नहीं, हमें तो उसकी ही आवश्यकता है जो 'रियल' की ओर ले जाए। फिर 'रियल' के सहारे आगे का (मोक्ष का) हो जाएगा। यह 'रियल' प्राप्त होगा तो 'रिलेटिव' प्राप्त हो ही जाएगा! पूरे जगत् का कल्याण करो ऐसी भावना का विकास करना है। सिर्फ बोलने की खातिर नहीं बोलना है, भावना ही ऐसी रखनी है। लोग तो इसे सिर्फ बोलने की खातिर बोलते हैं, जैसे श्लोक बोलते हैं, वैसे।

प्रश्नकर्ता : यों ही फिज़ूल बैठा रहने की बजाय ऐसी भावना की जाए तो उत्तम कहलाएगा न?

दादाश्री : अति उत्तम। बुरे भाव तो निकल गए! उसमें जितना हुआ उतना तो सही, उतनी तो कमाई हुई!

प्रश्नकर्ता : उस भावना को मिकेनिकल भावना कहा जा सकता है?

दादाश्री : नहीं। मिकेनिकल कैसे कह सकते हैं? मिकेनिकल तो, जो ज़रूरत से ज़्यादा, यों ही खुद को ध्यान नहीं रहे और बोलता रहे, तब मिकेनिकली!

भावना करके कर लो कल्याण

प्रश्नकर्ता : अपनी जो जगत् कल्याण की भावना है, उसमें कितना पुण्य खर्च होता है? यदि जीवन में सिर्फ वही भावना हो तो?

दादाश्री : हाँ, तब आपको उस भावना का बहुत बड़ा फल मिलेगा। हमें उसका फल क्या मिलता है, वही देखना है। तीर्थंकरों ने तो क्या किया कि जगत् कल्याण की ही भावना की, बस! उसका फल क्या आया कि वे तीर्थंकर बने। जहाँ उनके चरण पड़ते हैं वहाँ तीर्थ बन जाता है। मैं भी वही भावना करता हूँ। आपकी भी वही भावना है, वह भावना ज़रूर फलेगी।

प्रश्नकर्ता : आप्तवाणी में लिखा हुआ है कि वह भावना होगी तो आपको सभी कुछ मिल जाएगा, बिना माँगे।

दादाश्री : हाँ, अगर हम यही भावना करेंगे तो अपना तो अच्छा होगा ही और साथ ही साथ अगले जन्म में अपना जो होना होगा उसमें कोई हाथ नहीं डालेगा, रुकावट नहीं आएगी। जो इतना समझ गया न, उसका कल्याण हो जाएगा।

कल्याण की भावना की फल श्रुति

जगत् कल्याण की भावना बहुत समय से, बहुत जन्मों से करते आए हों तो यशनाम कर्म बहुत बड़ा होता है। यशनाम कर्म तो जगत् कल्याण की भावना में से उत्पन्न होता है। जगत् के लोगों को सुख हो, जितने परिमाण में ऐसी इच्छा(भावना) होती है, उसमें से यशनाम कर्म बंधता है

'जगत् का कल्याण करना है,' ऐसे उच्च विचार हों और खुद के दुश्मन का भी कल्याण करने की भावना हो, ऐसा सब हो, तब उच्च नामकर्म मिलता है।

कोई हमारा पुण्य देखता है तो भी खुश हो जाता है। जहाँ से मैं निकला, वहाँ से दो मील की दूरी पर घर रहा होगा और जैसे ही यहाँ गाड़ी से नीचे उतरुं तो कुर्सी लेकर हाज़िर ही रहते हैं। तब फिर सभी को ऐसा लगता है कि 'यह क्या

है ?' इसे दादा का पुण्य कहा जाएगा। प्रत्येक चीज़ हाज़िर! आपने देखा न! पुण्य का प्रभाव देखा न! और कैसा ज्ञान प्रकट हुआ? मेरे सोचे अनुसार हर एक व्यक्ति का कल्याण हो और कल्याण हो जाए ऐसा पुण्य निकला है। इसलिए अब आपको (दादा से) जो माँगना हो वह माँग लेना।

कल्याण का बीड़ा उठाने वाले को नहीं रोकता कोई

आत्मा प्राप्त करने के लिए जो कुछ भी किया जाता है, वह प्रोडक्शन है और उसी की वजह से बाइ प्रोडक्ट मिलता है और संसार की सभी ज़रूरतें पूरी हो जाती हैं। मैं अपना एक ही तरह का प्रोडक्शन रखता हूँ, 'जगत् परम शांति प्राप्त करे और कुछ मोक्ष पाएँ।' मेरा यह प्रोडक्शन और उसका बाइ प्रोडक्शन मुझे मिलता ही रहता है। ये चाय-पानी, जैसा आपको मिलता है, हमें उससे कुछ अलग ही प्रकार का मिलता है। उसका क्या कारण है? कि आपकी तुलना में मेरा प्रोडक्शन उच्च कोटि का है। उसी प्रकार यदि आपका प्रोडक्शन भी उतना ही उच्च कोटि का होगा तो बाइ प्रोडक्शन भी उच्च कोटि का आएगा। हर एक कार्य का हेतु होता है। यदि सेवाभाव का हेतु होगा, तो लक्ष्मी 'बाइ प्रोडक्ट' में मिलेगी ही।

जिसने जगत् कल्याण का निमित्त बनने का बीड़ा उठाया है, उसे दुनिया में कौन रोक सकता है? कोई भी शक्ति नहीं है कि जो उसे रोक सके। पूरे ब्रह्मांड के सभी देव उस पर फूल बरसा रहे हैं। अत: एक ध्येय तय करो न! जब से यह तय करोगे, तभी से इस शरीर के ज़रूरतों की चिंता नहीं करनी पड़ेगी। जब तक संसारी भाव है, तब तक ज़रूरतों की चिंता करनी पड़ती है। देखो न, 'दादा' का यह कैसा ऐश्वर्य है! यह एक ही प्रकार की इच्छा रहेगी तो फिर उसका हल आ गया और देवसत्ता आपके साथ है। ये देव तो सत्ताधारी हैं, वे निरंतर हेल्प करें ऐसी उनकी सत्ता हैं। जो जगत् कल्याण के लिए जी रहे हैं, उन्हें सभी देवगणों से पूर्ण रक्षण प्राप्त है। एक ही ध्येय वाले ऐसे पाँच लोगों की ही ज़रूरत है! अन्य कोई ध्येय नहीं, डाँवाडोल नहीं। अड़चन में भी एक ही ध्येय और नींद में भी एक ही ध्येय!

जगत् कल्याण का ध्येय तो क्या लेकिन यदि 'जगत् कल्याण' शब्द बोलेगा, उसे भी हमारा नमस्कार है।

अभ्युदय-आनुषंगिक फल की प्राप्ति

दादाश्री : 'जगत् का कल्याण हो', वह भावना कैसा होनी चाहिए? लोग तो समझेंगे कि किसी के लिए की है लेकिन वह भावना खुद के लिए ही करी कहलाएगी। यह भावना सब से पहले तो खुद का ही हित करती है। अभ्युदय और आनुषंगिक दोनों ही फल देती है। भले ही हम फल को, शब्द से नहीं समझ सकें लेकिन मिलते तो हैं ही न! जगत् कल्याण करने वाले के घर में तो कभी दु:ख रहता ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : अभ्युदय और आनुषंगिक फल अर्थात् क्या?

दादाश्री : 'अभ्युदय' यानी संसार में अभ्युदय होता जाता है, संसार फल मिलता है और दूसरा 'आनुषंगिक' यानी मोक्ष फल मिलता है। दोनों फल साथ में मिलते हैं।

अहो! अहो! ज्ञानी की करुणा

मैं कहता हूँ न कि 'भाई, मैं सत्ताइस सालों से तो मुक्त ही हूँ और विदाउट टेन्शन।' यानी जो टेन्शन होता था वह तो 'एम.एम.पटेल' को, होता था, मुझे नहीं होता था लेकिन जब तक

'ए.एम.पटेल' को टेन्शन होता है, तब तक हमें बोझा ही है न! वह खत्म हो जाए तब समझना कि मुक्त हुए और फिर भी जब तक देह है तब तक बंधन है। उसमें तो अब हमें हर्ज नहीं है। दो जन्म हो जाएँ फिर भी हर्ज नहीं है। हमारा हेतु तो क्या है कि, 'यह जो सुख मैंने पाया है वह सुख पूरा जगत् पाए।'

लोग मुझ से पूछते हैं कि, 'आप जगत् कल्याण का *नियाणां* (अपना सारा पुण्य लगाकर किसी एक चीज़ की कामना करना) कैसे पूर्ण करेंगे?' आपकी तो अब उम्र हो गई! सुबह उठते-उठते, चाय पीते-पीते दस तो बज ही जाते हैं। 'अरे भाई, हमें, इस स्थूल देह से कुछ नहीं करना है, सूक्ष्म में हो रहा है सब।' सिर्फ यह स्थूल दिखावा करना है। स्थूल का आधार तो देना ही होगा!

आत्मा की अनंत शक्तियाँ हैं। गज़ब की शक्तियाँ हैं, अपार शक्तियाँ हैं। एक आत्मा में अनंत आत्मा की शक्तियाँ हैं। हम अपने पलंग में सोते-सोते पूरे वर्ल्ड की सभी भावनाएँ करते रहते हैं और सोते-सोते ही पूरे संसार का काम कर सकते हैं।

कुदरती शक्ति से जगकल्याण

प्रश्नकर्ता : कई बार सोचते हैं कि हम तो एक घंटा या बहुत हुआ तो दो घंटे, तक बोलें कोई बीच में ब्रेक ले लेता है फिर खड़े हो जाते हैं, चक्कर लगाकर आते हैं जबकि आप यहाँ पर लगातार घंटों तक कैसे बोल पाते हैं?

दादाश्री : और कई बार तो दस-दस घंटों तक वाणी निकलती ही रहती है। एक ही जगह पर स्थिर बैठे रहते हैं, उसके पीछे भी कुदरती शक्ति होगी न? साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स हैं न! यह कोई गप्प नहीं है। बहुत से लोगों का कल्याण होना हो, तब ऐसी शक्ति उत्पन्न होती है, नहीं तो ऐसी शक्ति उत्पन्न ही नहीं होगी न? किसी जन्म में भावना की होगी कि जगत् का कल्याण करना है, तभी यह अमृत वाणी निकल रही है।

वीतरागी वाणी बहती है ज्ञानी के कंठ से

अपना यह विज्ञान, यह कोई मेरा सयानापन नहीं है। यह तो गिफ्ट है। क्या मेरा इतना ज़्यादा सयानापन हो सकता है? यदि चिट्ठी लिखनी हो न तो भी मुझे नहीं आता। लोगों का कल्याण होने का निमित्त, लेकिन गिफ्ट है यह और इस गिफ्ट के लिए मेरी पूरी तैयारी है।

प्रश्नकर्ता : उसके लिए पात्रता हो, तभी गिफ्ट मिलती है न?

दादाश्री : हाँ, बाकी, मेरी बिसात नहीं यह। और यह वाणी बहुत, हाइ क्वॉलिटी वाली है। यह वेल्डिंग अलग ही तरह का है।

प्रश्नकर्ता : सभी को समझ में आए ऐसा और सादी-सरल भाषा में।

दादाश्री : हाँ, अच्छी (सादी-सरल) भाषा में। लेकिन उस भाषा पर (मेरा) काबू नहीं है, (वह वेल्डिंग) भाषा पर आधारिता नहीं है। यह वेल्डिंग बहुत उच्च प्रकार है और यह हृदयस्पर्शी वाणी। एक ही शब्द से तो कितने रोग निकल जाते हैं सामने वाले व्यक्ति के, ऐसा वेल्डिंग!

अर्थात् जैसा हेतु हो, वैसी ही वाणी निकलती है। हेतु क्या है? जगत् कल्याण की भावना है और खुद शुद्धात्मा हुए हैं इसलिए वीतरागी वाणी निकलती है। जो वाणी निकलती है, वह सामने वाले पर सीधा असर डालती है। आज पहली बार परावाणी सुनी। उसे तो सुनते ही कल्याण हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : तो यह वाणी कौन बोल रहा है?

दादाश्री : वह अपनी सत्ता में नहीं है, वह रिकॉर्ड है। वह पिछले जन्म में आपने जैसी रिकॉर्ड की थी, वैसी ही रिकॉर्ड बजती है। ज्ञानीपुरुष तो खुद की रिकॉर्ड को धोते हुए आए हैं। वे इतनी सुंदर रिकॉर्ड लेकर आए होते हैं कि जगत् का कल्याण कर देते हैं।

जगत् का ज़ंग निकाल दे, ऐसी यह ज्ञानवाणी

निरंतर, सुबह ब्रश करते समय भी यह टेप-मशीन रखा जाता है। दादा के एक भी शब्द को ये लोग छोड़ते नहीं हैं और फिर उसकी पुस्तकें छपती हैं उससे। अगर इसे पढ़ेंगे तो कल्याण हो जाएगा। इस वाणी को पढ़ते ही दिल शांत हो जाता है। यह इस काल का सब से बड़ा आश्चर्य है! अमरीका में तो लोग आफरीन हो गए थे इस आप्तवाणी को पढ़कर। जगत् के लिए बहुत कल्याणकारी है न! जगत् के लिए हितकारी है न! पूरे जगत् (संसार) का ज़ंग निकाल दे ऐसी वाणी है यह।

राग-द्वेष रहित वाणी से कल्याण

एक बहुत बड़े वकील थे। वे क्या कहते हैं? धन्य है, इन दादा को! कितनी करुणा बरसती है! इन दादा के साथ मेरा किसी भी तरह का ऋणानुबंध नहीं है, किसी भी तरह का लेना-देना नहीं है। मेरे खुद के हित के लिए कितना कह रहे हैं! दिमाग़ पर कितना बोझ दे रहे हैं! तब फिर उस समझदार को क्या कहें? इसे करुणा कहते हैं कि, 'लोगों का कैसे कल्याण हो!' तब यदि कठोर शब्द से हो तो कठोर से, हल्के-फुल्के शब्दों से हो तो हल्के-फुल्के से, गाढ़ शब्दों से हो तो गाढ़ से, किसी भी तरह! जिससे हो उससे कल्याण करना है।

बाकी, इस बदबूदार कीचड़ में कौन हाथ डाले? लेकिन यदि वह एक जीव पार हो जाए न तो और कितने ही जीवों का जीवन रास्ते पर आ जाएगा! और ऐसा भाव रहता है कि 'उसका कल्याण हो।' उसका कल्याण करने के लिए ही हम डाँटते हैं। नहीं तो कौन ऐसा डाँटेगा? दिमाग़ कौन खराब करेगा! यह तो सामने वाले के कल्याण के लिए डाँटना है। वर्ना तो बाप तो बाप बनने के लिए डाँटता है। सामने वाले के हित से भी ज़्यादा बाप होने की बहुत भीख होती है। पत्नी को पति झिड़कता है तो वह पति बनने के लिए करता है और 'ज्ञानीपुरुष' सामने वाले के कल्याण के लिए डाँटते हैं।

यह हमारी वीतराग वाणी है जिसका मैं मालिक नहीं हूँ, जहाँ राग-द्वेष नहीं हैं। अत: यदि एक घंटे तक इसे अच्छी तरह सुना जाए तो भी कल्याण हो जाएगा। यह स्याद्वाद वाणी है! जो पूरे जगत् के कल्याण के लिए है।

बुद्धिकला - ज्ञानकला कल्याणार्थ

प्रश्नकर्ता : अर्थात् हमारा रोग जाने का यह मुख्य कारण यह हुआ (वाणी हुई)?

दादाश्री : हाँ, नहीं तो रोग जाएगा ही नहीं न! इसलिए तो भगवान ने ही कहा है कि, 'हमारे तो 108 गुण हैं लेकिन खटपटिया वीतराग के 1008 गुण होते हैं'। यानी हम में तो बहुत से गुण हैं। भगवान ने कहा है कि, 'बुद्धिकला और ज्ञानकला, ज्ञानी के पास दोनों होती हैं और हमारे पास सिर्फ ज्ञानकला ही है।' फिर भी भगवान ज्ञानकला नहीं दिखाते, उसे सिर्फ वे ही जानते हैं और खटपटिया वीतराग तो बुद्धिकला का उपयोग करते हैं। आप जहाँ फँस गए हो, बुद्धि द्वारा वहाँ से निकाल देते हैं और ज्ञानकला से फिट कर देते हैं।

अर्थात् अगर यहाँ पर सिर्फ बैठे रहोगे तब भी कल्याण हो जाएगा। यहाँ पर सुनते रहोगे तब भी कल्याण हो जाएगा। अगर इन बातों को सिर्फ सुनोगे, तब भी कितने सारे पाप भस्मीभूत हो जाएँगे क्योंकि ऐसी बात सुनी ही नहीं है और न ही पढ़ी है। यह अपूर्व बात कही जाती है। हाँ, पहले कभी सुनी न हो, पढ़ी न हो, श्रद्धा में न आई हो, जानी न हो, सिर्फ इसे सुनने से ही कल्याण हो जाता है।

देशना, तीर्थंकर के अलावा अन्य किसी की भी नहीं होती। हमारी तो, अक्रम विज्ञानी के तौर पर देशना भी है। तीर्थंकरों की और बुद्धि रहित (अबुध) ज्ञानी की वाणी देशना रूपी होती हैं, उपदेश नहीं होता। बुद्धि वाले ज्ञानी की वाणी देशना रूपी नहीं होती, उपदेश होता है। हमारा तो यह उपदेश नहीं है। हमने तो कभी भी उपदेश दिया ही नहीं। हमारी तो सिर्फ देशना ही होती है। अभी भी आप देशना ही सुन रहे हो। धन्य भाग्य हैं इन लोगों के! लोगों के कल्याण के लिए है यह।

कैसा योगदान जगत् कल्याण के लिए

इन (दादा के) हाथों में चौदह लोक का अभयदान है क्योंकि देह के मालिक नहीं हैं। हमें इस देह पर कितनी प्रीति है? इस देह से मोक्ष तो मिल गया, खुद का कल्याण तो हो गया, अब यह देह लोगों के कल्याण हेतु खर्च हो, उसी के लिए इसका जतन और उसी के लिए इससे प्रीति है। बाकी, हम तो इसे भी एक पड़ोसी की तरह ही निभा रहे हैं।

काफी कुछ समय 'मैं' 'मूल स्वरूप' में रहता हूँ, अर्थात् 'पड़ोसी' के 'तौर पर' रहता हूँ और कुछ ही समय के लिए इसमें आता हूँ। 'मूल स्वरूप' में रहता हूँ इसलिए फिर फ्रेशनेस ज्यों की त्यों बनी रहती है न! रात को भी कभी सोया नहीं। पाव घंटा ज़रा झपकी आ जाती है, बस उतना ही, दो बार का मिलाकर पाव घंटा, बाकी तो सिर्फ आँखें मुँदी रहती हैं। इन कानों से ज़रा कम सुनाई देता है तो लोग समझते हैं कि दादाजी को नींद लग गई है और मैं भी समझता हूँ कि 'ठीक है।' मैं खुद में और ए.एम.पटेल विधियों में रहते हैं। अर्थात् कैसे इस संसार का कल्याण हो, उसी के लिए सारी विधियाँ करते हैं। यानी वे निरंतर विधियाँ करते हैं, दिन को भी और रात को भी विधियाँ करते हैं।

जगत् कल्याण के लिए यह आप्तवाणी

यह हमारा साहित्य, आप्तवाणी वगैरह लिखी जाती हैं, उनके पीछे देवी-देवताओं की बहुत कृपा रहती है। वे वहाँ हाज़िर रहते हैं।

यह वाणी अट्ठारह हज़ार सालों तक हेल्प करेगी। जब तक महावीर भगवान का शासन चलेगा तब तक रहेगी। फिर बंद हो जाएगी। उसके बाद वाणी और पुस्तकें और मंदिर सभी बंद हो जाएँगे। छठवे आरे में न तो मंदिर होंगे और न ही पुस्तकें। मारपीट, मारपीट, आमने-सामने कुचलना, कुचलना! अभी अट्ठारह हज़ार सालों तक वहाँ महाविदेह क्षेत्र में, वहाँ चौथे आरे में जा सकेंगे। यह कैसी सुंदर वाणी है! मालिकी रहित वाणी देखी थी?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : सुनी भी नहीं। ऐसी यह मालिकी रहित वाणी सुनो तो सही?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : आप्तवाणियों की ये हज़ारों पुस्तकें छपी हैं न, वे उगेंगी, पचास सालों में, सौ सालों में, तब हिंदुस्तान का बहुत वैभव होगा।

इनके शब्दों पर से बहुत बड़ा 'वह' जमेगा। जैसे-जैसे लोग इन पुस्तकों को जानेंगे न, वैसे-वैसे इनकी कीमत समझ में आएगी।

यह वर्ल्ड का बहुत अद्भुत विज्ञान है। 'अक्रम विज्ञान', पूरे संसार के लिए कल्याणकारी है। उसे समझो! मेरे दर्शन नहीं करोगे तो चलेगा लेकिन वाणी के दर्शन तो करने चाहिए न? प्रत्यक्ष सरस्वती! यदि कान में घुस गई न तो कल्याण हो जाएगा।

हम अपने बुद्धि के आशय में सौ प्रतिशत धर्म और जगत् कल्याण की भावना लेकर आए हैं। अन्य किसी जगह पर हमारा पुण्य खर्च ही नहीं हुआ। पैसे, कार, बंगला, बेटा, बेटी कहीं भी नहीं। हमारी स्टेज पर आने वाला रुकता नहीं है, वह मोक्ष में चला ही जाता है लेकिन हमारा रुका हुआ है। उसका कारण यह है कि जगत् कल्याण होने वाला है, इसीलिए हमारा रुका हुआ है।

जीवन में जियो मोमबत्ती की तरह

हमारा जीवन किसी के लाभ के लिए बीते, जैसे कि यह जो मोमबत्ती जलती है, वह क्या खुद के प्रकाश के लिए जलती है? सामने वाले के लिए, परार्थ के लिए करती है न? सामने वाले के फायदे के लिए करती है न? उसी तरह अगर ये मनुष्य भी सामने वाले के फायदे के लिए जीएँगे तो उसमें उनका फायदा तो भीतर अपने आप हो ही जाएगा। वैसे भी मरना तो है ही! इसलिए अगर सामने वाले का फायदा करने जाएगा तो भीतर तेरा फायदा तो हो ही जाएगा और सामने वाले को यदि कष्ट पहुँचाएगा तो तुझे भीतर कष्ट होगा ही। तुझे जो करना हो, वह कर। तो क्या करना चाहिए?

अत: हमारी तो ऐसी भावना होनी चाहिए कि 'यह जो सुख मैंने पाया है, वे सभी पाएँ,' और कुछ भी नहीं। बाकी का सब तो मुफ्त में लेकर आए हैं न? जो बैंक में जमा किया हुआ था, वह क्रेडिट ले रहे हैं और अगर उसका उपयोग किया तो उसमें क्या तीर मार दिया? तो कल्याण में हमें कुछ न कुछ हिस्सा तो लेना चाहिए न!

कल्याण की भावना प्राप्त करवाती है पूर्णदशा

मनुष्य ने जब से किसी को सुख पहुँचाना शुरू किया, तब से धर्म की शुरुआत हुई। ऐसा रहा करे कि खुद का सुख नहीं लेकिन सामने वाले की अड़चन कैसे दूर हो वह रहा करे, तो वहीं से कारुण्यता की शुरुआत होती है। हमें बचपन से ही सामने वाले की अड़चन दूर करने की पड़ी थी। खुद के लिए विचार तक न आए, उसे कारुण्यता कहते हैं। उसी से 'ज्ञान' प्रकट होता है।

इस संसार का कुदरती नियम यह है कि यदि आप अपने फल दूसरों को देंगे तो कुदरत आपका चला लेगी। यही गुह्य साइन्स है। यह परोक्ष धर्म है। बाद में प्रत्यक्ष धर्म आता है, आत्मधर्म अंत में आता है। मनुष्य जीवन का हिसाब इतना ही है, अर्क इतना ही है कि मन-वचन-काया का उपयोग दूसरों के लिए करो। 'अरे! तूने शरीर का उपयोग अपने घर संसार के लिए ही किया है, शरीर का उपयोग तो जगत् कल्याण के लिए करना चाहिए।' जहाँ जगत् का कल्याण हो, वह जगह अपनी! जगत् का कल्याण वही खुद का कल्याण।

लोक कल्याण करते-करते देह छूट जाए तो, उसके जैसा कुछ भी नहीं है न! लोग व्यापार करते-करते मर जाते हैं, लोग आराम करते-करते मर जाते हैं, उसके बजाय लोक कल्याण करते-करते जाएँ तो उसमें क्या गलत है? जगत् का काम करोगे तो आपका काम यों ही होता रहेगा, तब आपको आश्चर्य होगा! भावना से भी

कल्याण होता है। भावना कौन कर सकता है? जो महापुण्यशाली हो या जिसे जगत् में किसी की भी भीख या लालच नहीं रही, वह!

जब तक अपनी आँखें स्वच्छ (निर्मल) नहीं हो जातीं, तब तक सामने वाले का कल्याण नहीं होगा। इसीलिए तो 'मैं' सभी को दर्शन करवाता हूँ। स्वच्छ आँखें, वही कारुण्यता है, अन्य कोई भाव नहीं। भगवान की भाषा में इज्जतदार कौन है? जो मात्र आँखों से ही 'विश्व कल्याण' करे, वह! जिनका जगत् कल्याण का '*नियाणां*' न हो, वे 'ज्ञानी' नहीं होते। जिनका अन्य कोई '*नियाणां*' हो, वे 'ज्ञानी' ज्ञानी ही नहीं हैं।

जगत् कल्याण के लिए यह अवतार

अगर इस शकरकंद को भट्ठी में डालेंगे तो कितनी तरफ से भुनेगा? चारों तरफ से। उसी तरह से यह संसार भुन रहा है। अरे, पेट्रोल की अग्नि से जलता हुआ हमें हमारे ज्ञान में दिखाई देता है! इसीलिए बस हमें यही देखना है कि इन लोगों का कल्याण कैसे हो और उसी के लिए हमारा यह अवतार है। इस आधे जगत् का कल्याण हमारे हाथों होगा और बाकी के आधे जगत् का कल्याण हमारे इन फॉलोअर्स के हाथों होगा।

संसार में मोक्ष का दिखाई देना, वह आश्चर्य है। यह अक्रम मार्ग दस लाख सालों में प्रकट हुआ है! अद्‌भुत मार्ग है! अनोखा आश्चर्य है! पूरे 'वर्ल्ड' के कल्याण के लिए है यह मार्ग। मैं उसका निमित्त हूँ।

कल्याण की भावना में स्व-कल्याण

आपको तो बस भीतर यही भावना रखनी है कि जगत् का कल्याण हो। वह भावना सच्चे दिल की है! जगत् को तो प्राप्ति होनी ही है, उसमें दो मत हैं ही नहीं। इसमें कुदरत ही हेल्प करेगी। बाकी कोई हेल्प नहीं कर सकता। वह वास्तव में ऐसी हेल्प करेगी! जगत् का कल्याण होना तय है! यह यों ही नहीं चला जाएगा। ऐसा जो 'विज्ञान' प्रकट हुआ है, वह यों ही नहीं दब जाएगा।

मूल ज्ञान तो आपके अंदर ही भरा पड़ा है। हमारे निमित्त से वह 'प्रकट' होता है इसलिए नैमित्तिक है। मैं तो निमित्त मात्र हूँ। इसमें से किसी भी बात में हमारा कर्तापन नहीं है। हम किसी चीज़ के कर्ता नहीं बन सकते। कर्ता बनेंगे तो हमें भी कर्म बंधेंगे। जो कर्ता बनता है, उसे कर्म बंधते हैं। हम पूरे (संसार) जगत् के कल्याण के निमित्त हैं! यह सब तो जगत् कल्याण के लिए निकला है!

'ज्ञान' यदि सिर्फ 'ज्ञानी' के पास ही रहे तो ज्ञान रसातल में चला जाएगा। 'ज्ञान' तो प्रकट करना ही चाहिए। प्रकाश वाला दीया कभी-कभी ही उत्पन्न होता है। तब तक घोर अंधेरा रहता है। यह तो सूरत के स्टेशन पर 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' के आधार पर 'कुदरती' रूप से उत्पन्न हुआ है! 'दिस इज़ बट नैचुरल!' तो फिर इसमें से जितने दिए प्रज्वलित करने हों, उतने हो जाएँगे। बाकी, दिए में घी तो सभी ने डालकर रखा है!

हम हमारे बाद ज्ञानियों की 'वंशावली छोड़ जाएँगे, हमारे वारिस छोड़ जाएँगे और उसके बाद ज्ञानियों की 'लिंक' चलती रहेगी इसलिए सजीवन मूर्ति को खोजना। उसके बिना निबेड़ा नहीं आ सकता।

अपना कल्याण हो गया, अब दूसरों का कल्याण हो, ऐसी भावना रखना। वही हमें पूर्ण दशा तक ले जाएगी। 'सभी का कल्याण हो' वह भावना, पहले खुद का ही कल्याण करती है!

- जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

18-24 अप्रैल : 'अक्रम क्रूज़' के टूर के बाद लंदन में पूज्यश्री के सात दिनों के विविध कार्यक्रम हुए।

18 अप्रैल को 'दादा दरबार' के दो सेशन आयोजित हुए, जिसका लाभ 300 महात्माओं ने पाया। जिसमें पूज्यश्री के व्यक्तिगत दर्शन के अलावा खुद को परेशान करते हुए प्रश्नों के महात्माओं ने ज्ञान से समाधान पाए। 19 अप्रैल को सिर्फ महात्माओं के लिए ही विशेष सत्संग आयोजित हुआ। लंदन और आसपास के जो महात्मा क्रूज़ में नहीं जा सके, उनके लिए यह सत्संग आशीर्वाद रूप था क्योंकि इस बार वार्षिक शिविर का आयोजन नहीं हुआ था। 20 अप्रैल को यू.के के सभी महात्माओं के लिए मिल्टन कीन्स में पिकनिक का आयोजन हुआ। पिकनिक का स्थल 'विलन लेक' था, जहाँ पर लेक के आसपास सुंदर बगीचा था। इस पार्क में एक बुद्धिस्ट मोनेस्ट्री (आश्रम) और 'पीस पेगोडा' भी हैं। पूज्यश्री जब वहाँ पर दर्शन के लिए गए तब वहाँ के बुद्धिस्ट पूजारी ने पूज्यश्री का स्वागत किया। वहाँ पर सभी महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ नमस्कार विधि और जगत् कल्याण की भावना की। पीस पेगोडा में महात्माओं ने गरबा किया। छोटे बच्चे से लेकर बुज़ुर्ग तक के लगभग 250 महात्मा पिकनिक में आए थे। महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ डिब्बा पार्टी करके प्रसाद ग्रहण किया। 21 अप्रैल को हेरो में आयोजित सत्संग में GNC के बच्चों ने पूज्यश्री का भव्य स्वागत किया। स्वागत के समय 'दादाई अक्रम बैन्ड' द्वारा 'असीम जय जयकार' बजाया गया। उस दिन श्री सीमंधर स्वामी का जन्म कल्याणक होने से पूज्यश्री ने वर्तमान तीर्थंकर के बारे में बात की। सत्संग ब्रैक के दौरान GNC के बच्चों ने स्वामी के लिए सुंदर पदगान और नृत्य प्रस्तुत किया। 22 अप्रैल को आप्तपुत्र द्वारा सत्संग और PMHT सत्संग हुआ। पूज्यश्री शाम को श्री सीमंधर स्वामी, अक्रम साइन्स और अंत:करण पर हुए GNC के प्रदर्शन देखने गए। इस प्रदर्शन के लिए बच्चों और युवाओं ने बहुत मेहनत करके अलग-अलग उदाहरण द्वारा अक्रम साइन्स और अंत:करण की आंतरिक बातों को दर्शाने का प्रयत्न किया। 23 अप्रैल को ज्ञानविधि के प्रयोग में 340 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की और हज़ार से भी ज़्यादा महात्माओं की उपस्थिति थी। अंतिम दिन सुबह WMHT सेशन और शाम को पूज्यश्री के फोलोअप सत्संग में नए व पुराने महात्माओंने अपने ज्ञान से संबंधित अनुभव कहे।

26-30 अप्रैल : जर्मनी के विलिंगन शहर में आयोजित 'अक्रम विज्ञान इवेन्ट' में 560 मुमुक्षुओं व महात्माओं ने भाग लिया। पहली बार जर्मनी में संपूर्ण कार्यक्रम लाइव वेबकास्ट हुआ जो बहुत सफल साबित हुआ और बहुत सारे महात्मा ऑनलाइन जुड़े। इस बार 'साइन्स ओफ कर्मा' अंग्रेजी पुस्तक का पारायण संपन्न हुआ। पारायण की वजह से वहाँ के महात्मा को ऐसा अनुभव हुआ कि उनके लेवल में कुछ बढ़ोतरी हुई है। ज्ञानविधि में 200 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया और उन्होंने ज्ञान से संबंधित सुंदर प्रतिभाव दिए और अक्रम विज्ञान को और ज़्यादा समझने के लिए तत्पर थे। पूज्यश्री द्वारा घर-घर पहुँचने वाली सीमंधर स्वामी की मूर्तियों की विधि हुई। जर्मनी में भी GNC के बच्चों के लिए सत्संग का आयोजन हुआ उसके अलावा पूज्यश्री और आप्तपुत्र द्वारा जनरल प्रश्नोतरी सत्संग, गरबा, भक्ति और दर्शन का आयोजन हुआ। जर्मन भाषा में अनुवादित पाँच नई पुस्तकों का विमोचन हुआ। सभी मूर्तियाँ और पुस्तकें फटाफट बिक गए। ज्ञानविधि के बाद होने वाला फोलोअप सत्संग के लिए इवेन्ट में आए ज़्यादातर महात्माओं ने रजिस्ट्रेशन करवा लिया था।

2 मई : यू.के, जर्मनी सत्संग और यूरोप की अक्रम क्रूज़ के बाद पूज्यश्री का सीमंधर सिटी में आगमन।

5-9 मई : अडालज त्रिमंदिर संकुल में पाँच दिवसीय PMHT शिविर का आयोजन हुआ जहाँ पर पूज्यश्री ने पति-पत्नी के बीच ताल-मेल कैसे रहे, बच्चों को कहाँ पर एन्करेज व डिस्करेज करें व लक्ष्मी के आधार पर होने वाली किच-किच के टॉपिक्स पर विस्तृत रूप से समझाया, और महात्माओं के प्रश्नों के हल भी दिए गए। शिविर के दौरान टॉपिक से संबंधित स्पेशल वीसीडी, आप्तपुत्र द्वारा अनुभव सेशन, एक्टिविटी, अंताक्षरी क्विज़, सामायिक व आप्तपुत्र-आप्तपुत्रियों द्वारा विविध ग्रूप सत्संग हुए। अंतिम दिन 9 मई को पूज्यश्री के 65वें जन्मदिन

पर शाम को महात्माओं ने एक घंटे के लिए जगत् कल्याण के लिए कीर्तन भक्ति की। रात को GNC बच्चों व सीनियर सीटीज़न महात्मा द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। पूज्यश्री ने वहाँ उपस्थित महात्माओं के आशीर्वाद लिए। लगभग 5500 महात्माओं ने शिविर का लाभ लिया।

16-18 मई : भरूच में आयोजित सत्संग व ज्ञानविधि कार्यक्रम के दौरान 700 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। स्थानीय महात्माओं ने हर्षोल्लास से पूज्यश्री का स्वागत किया। पूज्यश्री ने 'दैनिक व्यवहार में क्रोध का निबेड़ा' टॉपिक पर सत्संग किया। स्थानीय महात्माओं को पूज्यश्री के साथ मोर्निंग वॉक, दर्शन व सेवार्थी सत्संग का लाभ भी प्राप्त हुआ। अंतिम दिन को नए ज्ञान लिए हुए महात्माओं के लिए आप्तपुत्र द्वारा फोलोअप सत्संग हुआ।

19-22 मई : सूरत के महात्माओं ने भी पूज्यश्री का स्वागत बहुत हर्षोल्लास से किया। इस बार सत्संग कार्यक्रम का आयोजन रांदर क्षेत्र में हुआ। पूज्यश्री द्वारा दो दिवसीय सत्संग के दौरान 'लक्ष्मी से संबंधित भय व परेशानी से छुटकारा' व 'संसार सुलग रहा है बैर से' विषय पर विशेष सत्संग और मुमुक्षु व महात्माओं के प्रश्नों के समाधान हुए। पूज्यश्री के सानिध्य में स्थानीय महात्माओं को मोर्निंग वॉक, दर्शन व सेवार्थी सत्संग का लाभ प्राप्त हुआ। 1800 मुमुक्षुओं को आत्मज्ञान मिला। आप्तपुत्र के फोलोअप सत्संग में ज़्यादातर नए ज्ञान लिए हुए महात्मा आए थे।

25-29 मई : इस साल आयोजित हिन्दी शिविर में रिकॉर्ड ब्रैक, 3000 महात्माओं ने लाभ लिया। पूज्यश्री द्वारा 'प्रतिक्रमण' पुस्तक पर पारायण, WMHT और MMHT ग्रूप के लिए ब्रह्मचर्य सत्संग, पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार, माँ-बाप और बच्चों का व्यवहार, पाँच आज्ञा टॉपिक पर प्रश्नोतरी सत्संग हुए। ज्ञानविधि में 1025 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पूज्यश्री के सत्संग के अलावा भक्ति, गरबा, मंदिर में प्रक्षाल, पूजन और आरती, सामूहिक चरणविधि, मुमुक्षुओं के लिए आप्तपुत्र सत्संग, सत्संग हाइलाइट्स की स्पेश्ल वीसीडी, आप्तपुत्र-पुत्रियों द्वारा सहायता केन्द्र और ब्रह्मचर्य पर GD, नए महात्माओं के लिए पाँच आज्ञा पर वर्कशॉप, आप्तपुत्र अनुभव सेशन, पूज्यश्री के दर्शन, प्रभात फेरी जैसे कार्यक्रम का आयोजन हुए। इस साल यात्रा के बजाय ATPL ब्लिस गार्डन में आनंद मेला का आयोजन हुआ। शिविरार्थि महात्माओं ने वहाँ पर अलग-अलग व्यंजनों का आनंद उठाया व पूज्यश्री को सामूहिक उपस्थिति में भोजन ग्रहण करते हुए देखने का लाभ मिला। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम में नृत्य व नाटक प्रस्तुत किया गया। अंतिम सेशन के दौरान महात्माओं ने अपने ज्ञान, प्रतिक्रमण, असीम जय-जयकार से संबंधित हृदयस्पर्शी अनुभव बताए। शिविर के दौरान पूज्यश्री के हाथों दस हिन्दी पुस्तकों की ऑडियो बुक की दो सीडी का विमोचन हुआ।

2-4 जून : सैफ्रोनी-मेहसाना के लिए तीन दिवसीय कॉर्डिनेटर शिविर का आयोजन हुआ। इस बार लगभग 350 विविध सेन्टरों से कॉर्डिनेटर की उपस्थित थी। शिविर की थीम थी - सेन्टर में कॉर्डिनेटर की सैकन्ड लाइन किस तरह तैयार करनी। सैकन्ड लाइन बनाते समय कौन से कषाय बाधक हैं पूज्यश्री द्वारा इस विषय पर सत्संग हुआ। शाम को इस थीम पर एक्टिविटी सेशन तैयार हुआ। रात को थीम के रिलेटेड ड्रामा प्रस्तुत किया गया। अगले दिन इस थीम पर ही सेन्टर के नए लोगों को किस तरह सैकन्ड लाइन के तौर पर तैयार करना, उस पर मार्गदर्शन और मुंबई सेन्टर का अनुभव प्रस्तुत किया गया। पूज्यश्री द्वारा सत्संग भी इसी विषय पर हुआ।

दिनांक 4 मई को पूज्यश्री के कर कमलों द्वारा लींच (मेहसाना) में, आप्तसिंचन के साधक भाईयों के लिए रेसिडेन्शियल बिल्डिंग का उद्घाटन हुआ। आप्तपुत्र द्वारा क्लासरूम व आप्तपुत्रियों द्वारा किचन का उद्घाटन हुआ। शिविरार्थी कॉर्डिनेटरों की भी इस कार्यक्रम में उपस्थिति थी। पूज्यश्री द्वारा 13 फीट के श्री सीमंधर स्वामी का पूजन और प्रासंगिक बातें हुई। साधकों के माता-पिता को भी आमंत्रित किया गया था। समग्र संकुल को देखकर प्रसाद ग्रहण करके सब अलग हुए।

शाम को पूज्यश्री के सत्संग और व्यक्तिगत दर्शन कार्यक्रम के बाद कॉर्डिनेटर शिविर का समापन हुआ।

11 जून : ब्राज़ील, अमरीका और कैनेडा के सत्संग यात्रा के लिए पूज्यश्री ने सीमंधर सिटी से प्रयाण किया।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

सतारा **दिनांक :** 23 **जुलाई** **समय :** सुबह 11 से 5 **संपर्क :** 9011387150
स्थल : साईदत्त मंगल कार्यालय, वाढे फाटा, हायवे जवल, सदर बज़ार, सतारा.

कोल्हापुर **दिनांक :** 25 **जुलाई** **समय :** शाम 4 से 6-30 **संपर्क :** 9960787776
स्थल : राजर्षी शाहू छत्रपति मेमोरियल ट्रस्ट, कोल्हापुर.

सांगली **दिनांक :** 26 **जुलाई** **समय :** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 9423870798
स्थल : पाटीदार भवन, सर्किट हाउस के पास, माधव नगर रोड, सांगली.

सोलापुर **दिनांक :** 27 **जुलाई** **समय :** शाम 4 से 6-30 **संपर्क :** 8421899781
स्थल : कन्हैयालाल ब्रदर्स के ऊपर, दत्ता चौक, सोलापुर.

अहमदनगर **दिनांक :** 28 **जुलाई** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9422225475
स्थल : पटेल मंगल कार्यालय, सरदार पटेल वाडी, होटल राज पेलेस के पास, तिलक रोड, अहमदनगर.

नासिक **दिनांक :** 29 **जुलाई** **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 9021232111
स्थल : पाटीदार भवन, जनरल वैद्य नगर, स्टेशन रोड, पूर्णिमा बस स्टॉप, नासरडी, नासिक.

नागपुर **दिनांक :** 29 **जुलाई** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9970059233
स्थल : कच्छी विशा ओशवाल समाज, ५७/५८, अनाथ विद्यार्थी गृह लेआउट, लकडगंज, नागपुर.

अमरावती **दिनांक :** 30 **जुलाई** **समय :** सुबह 10 से 1 और शाम 4 से 7 **संपर्क :** 9403411471
स्थल : दादा भगवान सत्संग केन्द्र, कॉर्पोरेशन बेंक के निचे, भारतीय महाविद्यालय के पास, राजापेठ, अमरावती.

आर्वी **दिनांक :** 31 **जुलाई** **समय :** सुबह 9 से 11 **संपर्क :** 8600475726
स्थल : गुरूजी मठ, गुरूजी वार्ड, आर्वी.

दर्यापुर **दिनांक :** 31 **जुलाई** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 7218133513
स्थल : जैन भवन, बुलधाना अर्बन बेंक के सामने, पेट्रोल पम्प के पास, दर्यापुर

अमरावती **दिनांक :** 1 **अगस्त** **समय :** दोपहर 3-30 से 5-30 **संपर्क :** 9890991661
स्थल : राज भवन, सांईं नगर, अमरावती.

अमरावती **दिनांक :** 1 **अगस्त** **समय :** शाम 5-30 से 7-30 **संपर्क :** 9423622129
स्थल : त्रिवेणी कॉलोनी, कांग्रेस नगर रोड, अमरावती.

औरंगाबाद **दिनांक :** 2 **अगस्त** **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 8308008897
स्थल : यशोमंगल हॉल, पन्नालाल नगर, न्यू उस्मानपुरा, औरंगाबाद.

जलगाँव **दिनांक :** 3 **अगस्त** **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 8806869874
स्थल : ओमकार रिसोर्ट्स, DSP चौक, HDFC बेंक के पास, महाबल रोड, जलगाँव.

देहरादून **दिनांक :** 10-11 **सितम्बर** **समय :** घोषणा बाकी **संपर्क :** 9012279556
स्थल : जैन धर्मशाला, प्रिंस चौक और रेल्वे स्टेशन के बिच में, देहरादून.

भुसावल **दि :** 4 **अगस्त** **संपर्क :** 8007647330
संबलपुर **दि :** 6 **सितम्बर** **संपर्क :** 9668159987
कोलकाता **दि :** 2-3 **सितम्बर** **संपर्क :** 9830080820
बरगढ **दि :** 8 **सितम्बर** **संपर्क :** 8658090042
टाटानगर **दि :** 4 **सितम्बर** **संपर्क :** 9431179590
रूरकी **दि :** 8-9 **सितम्बर** **संपर्क :** 8171025467
रौरकेला **दि :** 5 **सितम्बर** **संपर्क :** 7749975047
चंपारण (रायपुर) दि : 9-10 **सित. संपर्क :** 9827481336

परम पूज्य दादा भगवान का 110वाँ जन्मजयंती महोत्सव - राजकोट शहर में

उद्घाटन समारोह : 1 नवम्बर - शाम 5 बजे से...
सत्संग शिविर : 1 से 5 नवम्बर, **जन्मजयंती :** 3 नवम्बर, **ज्ञानविधि :** 5 नवम्बर - शाम 4-30 से 8
स्थल : ग्रीनलेंड चौराहे के पास, राजकोट मोरबी रोड. **संपर्क :** 9426267365

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

12 अगस्त (शनि), शाम 4 से 7 – **सत्संग** तथा **13 अगस्त** (रवि), सुबह 10 से 12 – **आप्तपुत्र सत्संग** (मुमुक्षुओं के लिए)

13 अगस्त (रवि) शाम 4 से 7-30 – **ज्ञानविधि**

15 अगस्त (मंगल) रात 10 से 12 – **जन्माष्टमी** के अवसर पर विशेष भक्ति का कार्यक्रम

18 अगस्त से 25 अगस्त (शुक्र से शुक्र) **पर्युषण पारायण – आप्तवाणी 13 (उ.)** पर **वाँचन-सत्संग**

26 अगस्त (शनि) सुबह 10 बजे से – **पूज्यश्री के दर्शन** का विशेष कार्यक्रम

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको दि. 30 जुलाई 2017 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) पर्युषण के दौरान आप्तवाणी-13 (उ.) (गुजराती) पर वाँचन और उसी विषय पर सत्संग होगा। गुजराती नहीं समझ सकते उनके लिए रेडियो सेट द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपका मोबाइल एफएम सुविधावाला है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकते है।) 3) ओढ़ने-बिछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ। 4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

19 अक्तूबर (गुरु) रात 8-30 से 10-30 – **दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति**

20 अक्तूबर (शुक्र), सुबह 8-30 से 1, शाम 5 से 6-30 – **नूतन वर्ष के अवसर पर पूजन-दर्शन**

पूणे

8-9 सितम्बर (शुक्र-शनि), शाम 5-30 से 8-30 – **सत्संग** तथा **10 सितम्बर** (रवि) शाम 5 से 8-30 – **ज्ञानविधि**

स्थल : गणेश कला क्रिडा मंच, नेहरु स्टेडियम केम्पस, स्वारगेट बस स्टेशन के पास. **संपर्क :** 7218473468

11 सितम्बर (सोम), शाम 5-30 से 8-30 – **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : स्वयंवर मंगल कार्यालय, सीटी प्राईड के पास, 695/3/27, पूणे-सतारा रोड, आदिनाथ सोसायटी के पास.

हरिद्वार में केवल 'हिन्दी भाषी महात्माओं' के लिए विशेष शिविर

29 नवम्बर – शाम 4 बजे से – **3 दिसम्बर** – दोपहर 1 बजे तक – **सत्संग शिविर**

स्थल: पतंजलि योगपीठ फेझ-2, दिल्ली-हरिद्वार नेशनल हाइवे, हरिद्वार.

[रूरकी स्टेशन से 16 की.मी और हरिद्वार स्टेशन से 19 की.मी. की दूरी पर स्थित है।]

सूचना : 1) यह शिविर महात्माओं के लिए ही है. (जिन्होंने ज्ञानविधि ली है) माता-पिता के साथ बच्चे आ सकतें है. **2) पुरे शिविर का शुल्क = रु.1200/- (सिर्फ आवास और भोजन का खर्च).** 3) केन्सलेशन चार्ज 200/- रहेगा. 4) रजिस्ट्रेशन के लिए आपके नजदिकी सत्संग सेन्टर पर संपर्क करें. यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आप अडालज त्रिमंदिर में फोन नं. 9924348880 / 079-398 30400 (सुबह 9 से 12 तथा 2 से 6 के दौरान) पर संपर्क करें. 5) आवास की व्यवस्था सिमित होने के कारण दि. 31 अगस्त 2017 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है.

भारतमें पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- **'साधना' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हररोज़ पर सुबह 9 से 9-30; दोपहर 3-30 से 4; रात 10 से 10-30
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात 9-30 से 10
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा शाम 6-30 से 7, शुक्र शाम 4 से 4-30
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)

विदेश के सभी टी.वी. सत्संग कार्यक्रम यथावत जारी है

जुलाई 2017
वर्ष - 12 अंक - 9
अखंड क्रमांक - 141

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

निरंतर बस एक ही भाव

निरंतर जगत् कल्याण की भावना, दूसरी कोई भी भावना न हो। खाने के लिए जो मिले, सोने के लिए जो मिले, जमीन पर सोने को मिले, फिर भी निरंतर भावना क्या रहती हो? 'जगत् का किस तरह कल्याण हो।' अब वह भावना उत्पन्न किसे होती है? जिसका खुद का कल्याण हो गया हो, उसे यह भावना उत्पन्न होती है। इन महात्माओं को जगत् कल्याण की भावना रहा करती है, इसका अर्थ सिर्फ इतना ही है कि जिसका खुद का कल्याण हो जाता है, उसी को ऐसा विचार आता है। औरों को तो ऐसा विचार आएगा ही कैसे? अरे, उसके ही घर में बेहद झंझट होती रहती है! जिसका खुद का कल्याण हो चुका है, वही ऐसा कल्याण का खोजता है।

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.